

ग्रीष्म शत

Purnima Baxi
5 Thornton Court
East Brunswick
NJ. 08816

પુષ્ટમાગીથ રહેસ્ય દીક્ષાંશો

અનુભ બન છ. શ્રીદેવમિત્રાનિના શ્રીકઠમાં વિરાજમાન ચહેરોની પ્રયત્નમાં ચહેરોની પ્રયત્નમાં અતિધ્ય શોભાયમાન થાય છે પણ તે સમયે શ્રીદોહોરણને અનુભ લાગ્યા હોય કરી લાગ્યા હોય. લેખ પણ ખરાવે છે તેથી શરીરકળા (શરીરકળા)માં શરીરકળાને નાના પ્રકારની આસ્પરી કરવે જો

દીક્ષા કરું હતું ૧૩૧૫
શ્રીમહારૂપાણિ શ્રીમહાલક્ષ્મિદાસજી શ્રીમહોરણમા
શ્રીગુરુનાથજી (શ્રીગુરુદેશમ્ભુ) કૃત નિત્ય સેવા શંગારની ભાવના
કર્માદ્ધ.

اَللّٰهُمَّ اسْأَلُكَ مُلْكَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
مُلْكَ الْجَنَّاتِ وَمُلْكَ الْمَلَائِكَةِ
مُلْكَ الْأَنْعَامِ وَمُلْكَ الْبَرِّ وَالْمَاءِ
مُلْكَ الْمَنَّ وَمُلْكَ الْمَنَّ وَمُلْكَ
الْمَنَّ وَمُلْكَ الْمَنَّ وَمُلْكَ الْمَنَّ



ପର୍ଯ୍ୟ କାନ୍ଦଖୀ ପୋଲ୍ୟ, ଫେର ତମାଙ୍କ ନାମ କୁ ? ତମେ କ୍ଷୟା ହେଲୁ କୁ ?

कोनां एवी छे ? क्यों परस्या छो ?” आवेदी अधिके शांतिः ७३४ अथ आयो “मने सहि स्थामा कहे छे, कारणु के मारो रंग रथाम छे. हुं भज्यां हर रहें छुं. परस्यी नथी—कुनारी छुं. प्रत्यक्ष भारा लायक कोई योग्य पति हुज भयो नथी.” श्रीराध्मलाले रथामां मन लोवा पूछ्यु, “मने तमे नंदुकुं बहुत नाम सांख्युं तो हरी व ते तमारे लायक होरो.” रथामा जोली, “मने, भूलेच्युं पश्य ते ताम भारी आगल लोरो नहीं. ते तो चोर अने लंगर छे. आप्प भज्यां हुम भयवे छे; तेनी साथे लम्ह करवा करता तो कुं वारे रहेलुः हृष्णर दृश्यन्ते उत्तम छे. ते तो जुहो, चोर, प्रस्तरी रथामां रोक्नार अने भेडा लंगर छे. ज्वरोडा भाता पश्य गोपीननोनी कुरियाहोथी कुटाणा गयां छे. कोइनां छेकाराने भारे छे कोइना वास्तव्य होइ छे, कोइनी गागर टोणे छे, कोइनां हही, भाप्प दोणी हे छे, एम अनेह रीते आप्प भज्यां राइ पधावे छे. ऐन हुं तो तमने पश्य ए ज सलाह आपुं छुं कु भिल गमे त्यां लभ करने, पश्य तेनी साथे तो करशो ज नहीं. तेमां सुझी यो नहीं.” रथामानी नात सांख्याने श्रीराध्माले अतिरिक्त दुःख चुं तेना प्राण्यज्ञननी निदा सामान्य स्त्री सांख्या शोडे नहीं, ते श्रीराध्म ते कुवी रीते सहन करी शोडे ? हुरत ज वच्ये जोली हुया “हे रथामा ! तमारे घोलतुं भए करो. एक शेष हु आप्प लागतो होय, पश्य भारे तो ए ग्राण्यज्ञन छे एना विना जो क्षम्य हुं रही शडे तेम नथी. ते तो कुम्हतो सागर छे. रस्तु धाम छे. रसिक किरोभवि छे. तमे हुरत वाल्यां ज्यो। ए आवेद भेदानते आ शेष हुहेतां भने भइ कुःप आय छे परं भारा ग्राण्यनाथनी निदा हुं सांख्या शहती नथी. माटे लाचार थहु तमने कहु छुं के हुरत वाल्यां ज्यो।” रथामा जोली बेन, हु गमे तेम कहे पश्य हु ज्ञक्षरा नहीं. हुं तदृश बोणा छे,

माटे हुं कुरियी कहुं छुं के तेने तारा उपर जग्ये प्रेम नथी. ते तो तने हो छे, उपरथी ज्योटा धर अतावे छे. तेने तो अनेह ओंसेमां प्रेम छे तेवाने परस्यीते चुं सभ्य पाम्यो.” राधा गुरसाथी जोली, “तेने कोठान कोटि श्री होय तो पश्य लहो, भारे तो ते एक व छे. ते किंवाच रथाने पश्य हुं ज्ञानने जेती नथी ते भन्यां पश्य लावती नथी. हुं तरत ज याली जा.” छतां रथामा तो हही ज नहि. छेवटे श्रीराध्म योते हहीते ज्ञान ज्ञानावाही अहंस्यां वाल्यां गयां अने रथामा आवे नहि भाटे अहंस्यी वारण्युं अध्य हही दीक्षुं, अने पोताना ग्राण्यनाथनी निदा सांख्यावाही अतिराश्य हुःप अथुं हहुं तेथी रुदा लाभ्यां. रथामाये एक जग्यामांथी लेयुं तो श्रीराध्माले रही रक्षां छे. रक्षां रक्षां ते कुंठ गाय छे (विलाप कुरे छ) शरस्तिउं चेतन पश्य भराभर नथी रथामा जोली, “मारी राधा ! भारी राधा ! भारा सामुं एकवार तो नो. हुं जाहिं छुं” राधाएँ ज्ञानी सामी नगर हही तो साहात श्रीराध्म तेना आनंदनो पार रखो नहि. एकदम भारण्युं उधारी श्रीहोराज्ञने गयो वाग्नी धडी “अरे भारा वहाला ! आपी लीला कोईपश्य वज्रत करशो नहि भारो तो ज्ञप ज्ञतो रहेहो.” श्रीहोराज्ञ जोली, “राधारी हुं रसनी भास्य छ तारो प्रेम अगाध छे. धन्य छे तेने.” सारभाद रसदान आपी पोते अंतरथान वया. ते वापतनी राधानी धून :-

श्रीराध्म रहता रहता विलाप कुरे छ (रथाम धून)

मेरे भन्यें हे रथाम, मेरे तन्यें हे रथाम,
मेरे नेन्यें हे रथाम, रथाम, रथाम;
हो सभी रथाम, रथाम, रथाम
मेरे भरतक्ये रथाम, मेरे लंभरमें रथाम,
मेरी त्रिक्षें रथाम, रथाम, रथाम, रथाम.

मेरी साड़ीमें रथाम, मेरी नाड़िमें रथाम,

मेरी कंचुकीमें रथाम, रथाम, रथाम;

हो सभी रथाम, रथाम, रथाम;

मेरी रसनामें रथाम, मेरे कानोमें रथाम,

मेरे कंठमें हे रथाम, रथाम, रथाम;

मेरे चित्तमें हे रथाम, मेरे हिलमें हे रथाम,

मेरे हृदयमें रथाम, रथाम, रथाम;

हो सभी रथाम, रथाम, रथाम.

मेरे खातें हे रथाम, मेरे पीते हे रथाम,

मेरे कुतों हे रथाम, रथाम, रथाम;

हो सभी रथाम, रथाम, रथाम.

मेरे छातें हे रथाम, मेरे पीते हे रथाम,

मेरे कुतों हे रथाम, रथाम, रथाम;

हो सभी रथाम, रथाम, रथाम.

मेरे अंगमें हे रथाम, मेरी कुप्रियों हे रथाम;

मेरे रोब रोब रथाम, रथाम, रथाम;

हो सभी रथाम, रथाम, रथाम.

मेरी रसनामें रथाम, रथाम, रथाम,

दैर्घ साड़ी में हे गए रथाम;

हो सभी, रथाम, रथाम, रथाम.

(२) श्रीराधार्जना दीवा परीक्षा।

ओड़ सभ्ये श्रीराधार्जना अद्भुत गोपकुमार भन्या।

माथे लाल कम्बंभी पाथ लाकी झूकी रही छे, सुहर चिन्मतिवित्र सुखन पहेरी छे,

पगभां नोजरी लागी रही छे, हाथमा सुहर लकड़ी रही गर्ह छे,

कमीमां भासी जोसी छे, उम्ह पर शिंगटी मधुर भाङ्ग रही छे :

आपा अद्भुत वोषे वनभां चारे तरह ज्ञेता ज्ञेता चाल्यां जाय छे।

श्रीहार्दिरज्ञ ओड़ कहंचना वक्ष नीचे ज्ञेष्ठा छे, त्यां आ गोपकुमारनी नजर गाइ। ज्ञेता नजर एक चातां ज्ञेता प्रेम उपन्यो, अने

श्रीहार्दिरज्ञ ग्रेम्ही बोलावनाथी आ गोपकुमार पशु तेमनी पासे आवी ऐसो। अने ग्रेम्ही वाती करवा लाल्या। श्रीहार्दिरज्ञनी नजर

भालइ आजसूधी में बज्जां हैंगो नथी। तेना अग्रेम्हंगमां सुहंदरता छे। भारा करतां पशु अचिक्ष सुहर लागे छे।” श्रीहार्दिरज्ञ ग्रेम्ही

पृष्ठयुँ। “तने कुप्राणी आवा छा ? अने क्यां जरा भाषुँ छे ?”

गोपे जन्माल आयो, “हुँ भरसानेही आवुँ हुँ, बनलीला ज्ञेवा नीकल्नो छुँ, अहुँ विवस्थी तमते मलवानी हाँचा हुती, आज्जे ते

अच्यानक भूरी थधु।” श्रीहार्दिरज्ञ बोल्या, “हुँ भरसाने तो बधी

वपत आवुँ हुँ, पशु तमने लोया नथी।” गोप बोल्यो, “हुँ ज्ञेवे

कोइ कोइ ज्ञेवा नथी। आज्जे बनलीला ज्ञेवा निभिरो आवी गयो

हुँ।” अलु बोल्या, “वृषभानलक्षीते तो तमे ओणभता हरो ज़।”

गोप ज्ञेवो “हा, हा, तेने तो आवुँ ज्ञ ओणभे छे। ते

अहुँ ज अभावली छे, कोइने पती करती नथी, आयो दिवस रभड्या

करे छे, तेनां आतपिता नेपशु गण्डी नथी। ओड़ सारी झीने रोजे

तेवा ऐड़ गुण तेमां नथी, इपनी त्री छे—पशु दिवनी तो कुटी छे।

तेना चित्तवुँ ये कोइ नथी, तेने कोइ कुशल गोप तो लेशे नदि।”

श्रीहार्दिरज्ञ आ सांख्याने रस्त्युँ यह गया, “आश्चर्यथी ते गोप

ज्ञानुँ ज्ञेवुँ अने कहक उत्साही बोल्या, “तमारे ज्ञेवुँ भन्य

करे, मारे तमारो एकपशु शहद सांबगवा नथी. ये थी राधा तो गुण्ठने सागर छे. आज्ञा विख्यां तेना जेवा चुहंडी नथी. ते मारी प्राणपरी, प्राण-आधार छे. तमे अमे ते करणथी हृषिकालथी तेनी निंदा करो ते माराथी सहन थतु नथी. “येरे भन्नें हैं राधे, मेरे तनमें हैं राधे; राधे, राधे, राधे, निश्चिन रट्या करूँ जुँ.” गोप बोल्या, “...पशु ते तमने इतिहस याहती नथी. इतिहस माघन-चोर कुपी आज्ञा भग्नां तमारी रुक्षेती करनार ते ज छे. तमे तेने भेण्टीने सभी थरो नहि, पशु लहू ज हुँगी थरो. रोज मन हररो, ने रोज भनावूँ पहरो, ते तो भास खोया लाउमा हिजी छे अने जहू चमावली तथा गविष्ट थह अह छे.” पशु ऐहम कोक्षया बोली बिल्या, “तुँ ऐहम चाल्यो ज, एक शहद खोलिश नहि, मारी राधा भारो ग्राम छे, आ भवमां ते भने नहि भदो तो तप करीन भिन्ने जने पशु ओने ज भेण्टीश. “आरी राधा, मारी प्राण आधार, मारी ज्ञनभयी, करता करता पशु गांडानी माझक खोलता भोखता डिभा थह गया. अने राधा राधा, रटां रटां ऐहु थह गया. तुरत ज रेखाम्ये पहरीने ज्ञेणामां लह लीधा—पेताना साहुना छहथी भसीनो लुची नाज्यो. ने पवन नाज्या लागी. शुद्धि आतां प्रश्न जुच्ये छ तो योते ज्वरे ज श्री राधाना ज्ञेणामां पेत्वा छ. आनंद पार रखो नही. प्रश्न बोल्या, “हे आरी त्रिष्टपशु वापते आवी लीला करशो नहि.”

(3) जेणी शिला

अह समये हांडिरलु जेवीनो वेश लहूने भासाने चाल्या. आये नेषीना जेवी पाधी, मेटो आंगंरेयो, ने रेशमी क्रेतनी धोती पहरी छे, उभे सहर जेस पशु नाज्यो छे, क्रपणामां असम लगावी दीहुं करी दीहुं छे. पग्नां दक्षिणी जेवी पहरी छे, पापाधीयां दीपशु जोस्यु छे. भगवामां योगी छे आवा वेश रातना नवसना

समारे प्रश्न श्री राधाजगती गतीमां आवी पहेंच्या. “कहो, जित्य, वर्तमान जाणुनार जेवी कशायी आवे छे. जेवी जेष जेवी विवाहवा होय ते अमातरी पासे आवे. अमात्र वयन कहीमे असत्य पहुँचे नयी. बेर जेहा गंगा आवी छे, जेवी लाल देवा होय ते लहू दो, आजनी रात ज आ आमां जीवे, सवारे चाल्या नह्यु. ” बोरे भेण्टीने अभी जोकेना भनने आकर्ष्य करवा लाया औ राधाजने ग्ने आ शहदो पहां ज कलिता सभीने आसा करी, “हे सभी ए जेण्टीने अभी जोलावी लाल. श्रीहांकोरज दुः केम ना प्रधायी-जाप्त्ये ओने पूछी नोक्त्ये.” लकितालु जेण्टीने तेही लाली. जेण्टी नेही जाप्त्ये योने पूछी नोक्त्ये. “महाराज जेवी लाली जेवी छो ?” महाराज बोल्या, “हरेकना भननी गुप्तमां अप्त वात अमे जाप्त्ये छीयो, अमे ग्रासीमां भार वरस जस्तीने आज्ञा छीयो, अमात्र अनिय फोइ पशु काले जोडुँ पहुँचे नही. एउनुँ होय ते पूछो.” भक्तिलुम्बे पृथिव्यु, “महाराज, अमारी आ श्री राधा जप्तीना विलमां असारे शा लियार याले छे ?” जेवी नेही, “जेवी ओवा नियम छे कू-जेवी जाहुँ दोय ते ज पूछ तो भरोभत सचोट ज्वाल आवे. भीज्युँ पूछ तो भरोभत ज्वाल ना आवे, कहाय जोडुँ पशु पहुँ भारे तमारी सभीये पृथिव्यु नेहुओ.” श्री राधाजु बोल्या, “महाराज, भार विलमां अस्यारे शा विचार छे ते कहो.” महाराज, भायाभायी गीपशुँ काढी, आंगंगीना वेदा गप्ती बोल्या—“आ समये तमारे ज्यान नदुभासामां लाग्यु छे, अने ते क्यारे भक्तो ते विचारमां लीन थह गयो छे. कहो ये साहुँ छे कू जोडुँ ?” श्री राधाजु जरा दस्री पहां पड्यो. महाराज जेवी, “म लक्षिताज, अमारा जोप कुवा छे ?” तेनी प्रीति भारा तरक झुनी छे ? महाराज जेवी, “ते तमने

ચૌડીવારમાં જ મલશે, તમને તમે ચાહો છો તે કરતાં તે ખમજ
પ્રેમથી તમને ચાહે છે. તે તમને મલવા મારે તલબપાપડ યઈ રહે
છે, બોલો હવે ચું પ્રેરજું છે? શ્રી રાધાજીને નોણી ઉપર ખડુ જ અંદું
ચોંડી અને કહ્યું, “મહારાજ, મને તે જલદી મળો તેમ કરો ઇં
સાપને અમૃતસ હર આપિશ. ને તમારો ઉપકાર માનીશ.” નોણી
બોલ્યા, “અમે કંઈ પેસા માટે નોય નોતા નથી. અમારે વેર પ્રજું
આપેનું ખાવતું છે. આ તો નોણીની વિદ્ધા કેરેલી સાચી છે તે
રોગેથે જીવાતું છે, નોણી લોકો ભરૂખપણ્ણાંથી નોણીના ખેંચાની
નિદા કરે છે. તે કરતાં ખંડ થાય. છતાં તમે પ્રેમથી ને આપણો
તે લક્ષ્ય. તેથી અમે રણ યક્ષય. બળી તમે કહો તો વિદ્ધાને ખવે
હમણાં હુરત તમને નદંદંન મેળની આપું, ચાલો પેલા ઓરડામાં
લલિતાજીને ત્યાં રાખી નોણી મહારાજ ભીન ઓરડામાં રખાયા
સાથે ગયા, ત્યાં નઈ પેતાતું રવર્ષપ પ્રગટ કરતાં જ રાધાજીના
આનંદો પાર રવો નહિ. પ્રભુ ત્યાં રત રહી. રાસલીલા કરી
પ્રકાતે પાછા આવ્યા, આ લીલાનો અગ્રલખ લલિતાજીને પણ થયો

(૪) માણિથાર લીલા

એક સમયે આંદોઝેરજુ ભાણિથારનો વેશ લઈ ખરસાના પદ્ધાયા,
તે આંરાધાજીની પેરીમાં ફરતા ફરતા ચ્યાન્યા. મહુર રવરે, “કોઈ ચૂરી
બંગડી નથી.” તેમ બોલાવા લાયા, શ્રી લલિતાજીએ શ્રીરાધાજીની
માતાજી કીરતિજીને વિનાની કરી કે, શ્રી રાધાજીની ચૂરી જૂની ચર્ચ ગઈ
છે તો નની ચૂરી લઈ પહેરવો કીરતિજીએ આરા કરી કે લલિતા!

ચૂરીઓ કંઈને કીરતિજીના હાથમાં આપવા માંડી, જણી કુશને
ખડુ જ નની યા તો મેરી ચૂરીઓ આપવા લાયા. એક ચૂરી
બંધેસ્તી આવે નહિ. ભષી ચૂરીઓ બહલી, પણ ખંડ ખેસતી

કચાંથી આવે? શ્રી રાધાજી અહીનાંનો ને જોલાં, “માતાજી! મારો તો
હાથ કુંઘે છે, મારે ચૂરી નથી પહેરવી” ચૂરીનાંનો બોલ્યો, “માતાજી
તમને ચૂરી પહેરનતાં આવડતી નથી, એલે તેમ થાય છે. નો કહો
તો હું પહેરાની હું, લગારે હું નહિ થાય, હું રો તો તે થાયો
છે.” કીરતિજીએ કહ્યું, “બાબો, બાઈ! પહેરાવી હે પણ નો નો

લગારે છુન થાય નહિ, મારી લાલી ખડુ જ કોમળ છે.” ચૂરીનાંનો
કહ્યે, “હા, એ તો હું સમજ છું, લગારે છુન થશો નહિ.”
કીરતિજી કહે ખડુ સારુ, લલિતા! ભારણાની અંદર જેસી ક્રમાંડ
ખંડ કરીયે, કોઈ આચર્ચ જરુ દેખે નહિ, તું પાસે જેસાને,
હું ખરમાં કામ છે તે જાહેં છું. નોણી બેનની પાસે રહેને,
તેને હું ચાય નહિ. એલખું હું કીરતિજી તો ખરમાં કારો
વળણાં કમાડ ખંડ કરી શ્રી રાધાજી. લલિતાજી તથા ચૂરીનાંનો બેઠા.
માણિથાર ચૂરી લઈ શ્રી રાધાજીના હરતે ચાલવવા લાગ્યો. પ્રજુનો ક્રમાંડ
હરતે શ્રી રાધાજીના હરતેને લાગતાં શ્રી રાધાજી સમજુ ગયાં કે ચૂરીનાંનો
ખીને કોઈ નથી પણ સાક્ષાત શ્રીદોઝેરજુ છે. તરત લલિતાજીને

ભારણાની ખાદાર જેસી દેખરેખ રાખવા શ્રી રાધાજીએ આરા કરી
લલિતાજી કમાડ ઉંઘાડી ખાદાર આવી, અને કમાડ ખંડ કરી, ખાદા:
જેસી ગઈ. પ્રજુનો પેતાનાં હરણન આપ્યાં, અને આનંદાન
રસાન દીકું. ચૌડીનાર પણ શ્રીદોઝેરજુ ચાલ્યા ગયા. શ્રી રાધાજી તથ
લલિતાજી આનંદાનો હોડતાં આવી બોલી ડિયાં, જુયો, માતા
કરી સરસ ચૂરી પહેરાની જે માતા પણ ચૂરી જેઝેતે પુસ થાયાં
ચૂરી ભરાય ખંડ ખેસતી, સારી ચુંદ રંગન હતી.

(૫) કાંસકી લીલા

એક સમયે પ્રભુ કાંસકી વેચનાર જીંનું રૂપ લઈ “નાનાં
બંધેસ્તી આવે નહિ. ભષી ચૂરીઓ બહલી, પણ ખંડ ખેસતી
આવે જ નહિ, જણી ખૂણીને જ એવી ચૂરી આપે, ખડી ખંડેસ્તી

કંસકીઓ લઈ ભરસાનાની ગળીઓમાં ફરે છે. "કોઈ કંસકી લ્યા કંસકી દ્વો" તેમ લાંબા સહે ખોલે છે. લલિતાજુને આવી શ્રીરાધાજુને કહ્યું. અરે ખરી, કંસકીઓ ખડ સંદર છે આપણી પસે તેવી એકે કંસકી નથી, મારે લઈએ તો તીક શ્રીરાધાજુને આરા કરી, બોલાવી લાચ એતે. લલિતાજુ કંસકીનાળો બોલાવી લાની. શ્રીરાધાજુ કંસકીઓ નેના લાગ્યા. કંસકીનાળા ખાઈ અહંકી એક અણ્ણી કંસકી કાઢી બોલી, આ કંસકી તમારે લાયક છે, તેના દાંતા એટલા શ્રીણૂ છે કે જાણે વાળે મોતી પરોવી રહ્યા હૈય. તમે મારી પસે એસો હું તમારા વાં હોળા આપું. પ્રશ્ન શ્રીરામિનીજુના વાળ હોળા! લાગ્યા. વાળ હોળતાં શ્રીકરનો રૂપસા યતાં તુરત જ શ્રીરાધાજુ સમજુ ગયાં કે, આ કંસકીનાળા ખાઈ ખીજું કોઇ નહીં પણ હાડોરજુ જ છે, તેથી લલિતાજુને કહ્યું કે, આ કમાડ ખંખ કરી, તુ અહાર જેસ, કંસકીનાળી ખાઈ પૂરત જ શ્રીહાડોરજુ રૂપમાં પ્રગત થઈ અને અનેથે આનંદ કર્યો.

(૬) છંદ્ષાં છંદ્ષાની લીલા

એક સમયે શ્રીહાડોરજુ છંદ્ષા છંદ્ષાર ખાઈતું રૂપ લઈને ભરસાને જ્ઞાના. "કોઇ અમૃત છંદ્ષા છંદ્ષાવોર, છંદ્ષા, એમ લાંબા સહે બોલતા શ્રીરામિનીજુની પોરીમાં આવી પહોંચ્યા શ્રીરાધાજુચે સાં સાંકલ્યનો અને લલિતાજુને આરા કરી કે, છંદ્ષાંનાળાને બોલાવી લાચ. લલિતાજુ જઈને તેતે તેરી લાગ્યી. શ્રીરાધાજુની ચામે છંદ્ષાંનાળી બેસી ગઈ. શ્રીરાધાજુ પૂજા લાગ્યાં, "તેમ સરસ છંદ્ષાં છૂટતો આવડે છે? શરીરના કોઇ પણ લાગમાં તુ છંદ્ષાં છૂટી શકે છે? મારે શરીર ખડ કોમળ છે મારે કુણ ન થાય તેમ છંદ્ષાં છૂટી શક્યા?" ખાઈ બોલી, "થા, થા, તેમાં ચુ મેડું કાયું છે? લગાડે કુણ નહીં થાય, અને તમે કહેશો તે ભાગમાં

ભરસ છંદ્ષાં છૂટી આપીશ. છંદ્ષાંમાં નામ પણ લખી આપીશ. શરીર ઉપર તો છંદ્ષાં છૂટી રહું છું, પણ અહંકારના ભાગમાં પણ કહેશો તો છૂટી આપીશ બોલો. તમારે જથ્યા છંદ્ષાં હેઠ ત્યાં ભાગમાં લગાડે કુણ થશે નહીં, પુરસ્થી કહે, તમને ખરાર નહીં પડે તેવી રીતે કામ કરીશ, બધાર થું કહું!"

રાધાજુ બોલ્યા :—

નમન કરે કર જોડિતે, વિનંતિ કરી લાગ્ય પણ,	૧
દ્રોપ કરી બેની લખ દિયો, ભરતકે માધવરાય.	૨
નેતરને નંદાલ લિયો, નાકે નંદવરાલ,	૩
ગલોમે ગોનિદ લિયો, ગાલે લિયો, ગોપાલ.	૪
છેલ જાળીઓ છાતીયે, મનમાં મોનરાય,	૫
મુખ પર મુરલીધર લિયો, અધર ચુધારસ પાય.	૬
તનમે વિજમજુ લિયો, કંદુમે દેશનરાય,	૭
નાભિમે નારાયણ લિયો, લળી લળી લાગ્ય પાય.	૮

રોમ રોમ દિખ દિયો, પથરો શ્રીનાય,	૧
રસનાંબે રસનાંબર, ચિત્તમે લિયો ચિત્તચોર,	૨
કાળજાડે કાળજો, વસો, અષ્ટે નંદિશોર	૩
મહન ગોપાલ મેરે અંગેમે સદા કરો વિહાર,	૪
રસિક નામ લિયો દિયો, આપુ એકાવન દાર.	૫

શ્રીરાધાજુ સન્માં આરસી રાખી બોલતાં ગયાં તેમ નામ લખતાં ગયાં. ચહુર લલિતા તથા ચતુર શિરોમણી શ્રીરાધાજુ સમજુ ગયાં કે આ તો નંદલાલ પોતે જ છંદ્ષાંનાળિનું સ્વરૂપ લઈ ખખાયો છે, પોતાના ભક્તોને મારે આવી અનુકૂલીના હાડોરજુ કરે છે, આ વખતે પણ આનંદું દાન કરી પ્રશ્ન પણ નથી.

(૭) યંત્રલીલ સાથે શીલા

એક સમયે ચંદ્રવલીજુનો પતિ ગોરખન સૌના સાંભળતાં હાથ્યો કે, એ નંદલાલ ગમે તેના ભરમાં પેણી જન્ય છે. ગમે તેના દર્દી માખણ દૂરી ખાય છે, ગમે તેમ લંગરાઈ કરે છે, વાટે ધારે રોકે છે, પણ મારે ત્યાં તે આવી શકતો નથી મારે ત્યાં તે આવે તો ખપર પાડી હું. મારી સ્વીની મસ્કરી કરે તો જોઇ લઈ. એ તો લિન્ચરી ભકરીઓને સત્તાવે છે, મારા જેવા વાધની નેડે કામ પાડી જુયો ત્યારે ખપર પડે. એક સણો દોડતો હોડતો જઈને, આ સવે સમાચાર નંદલાલને કહી ગયો. સખાની વાત સાંભળી નંદલાલ હરથાં ને આસો કરી કે તે ગોરખનને જઈને કહી આવ, કે આને જ તારે ઘેર નંદલાલ પધારશે. તારે જેણદો એકી પહેરે રાખવો હોય તેણો રાખનું, કંઈ કચાસ રાખ્યાં નહિ. સણો જઈને સવે સમાચાર ગોરખને કહી આયો. ગોરખન મધુરામાં કંસને ત્યાં ચાકરી કરતો હતો, તેથી તેને કંસના સંગની અસર યઈ હતી. પોતે ઘેર જઈ પોતાની માતાને સવે છીકત કહી અને સવે રીતે સાખ રહેણા કહ્યું, પોતે નાના મોટા દ્રેપણા વીણુંને ખારણા આગળ હગલો કર્યો. અને લાકડી બગેરે સાખનો પણ રાખ્યાં. આજે નંદલાલ આવે તો અરથાર સીધો કરવા તૈયારી કરી. ચંદ્રવલીને ચિત્ત યઈ કે મારો પતિ આસુરી જન્ય છે. અતે તે નંદલાલને મારી બેસરો! તેથાં તેણે પોતાની અંગત સખી મારફતે કહેણું કરેણું કે; આજે નંદલાલ નહિ. આરા પતિએ સવે તૈયારી કરી રાખી છે. અનુતું લોખમ છે. દેક્ષણે મલાં નહિ. નિરાશ યઈ પણી આવી. ચંદ્રવલીજુને મનમાં બહુ દુઃખી યઈ, પણ થું કરે! પ્રભુ કર્ણાયે મધુરાણી કંસનો પત્ર લઈ કુદમ ભાણું. આયો, ને ગોરખનને પત્ર આપી જોયો કે, જરાતું કરમ હોવાયી તમને હુરત જ હમણાને દમણા બોલાવે છે.

ગોરખન વિચારમાં પડી ગયો, પણ લાયાર રણનો હુકમનો જાગ

યાય નહિ, ક્રમકે બંગ કરે તો આપી જ બન્યું. તેથી પોતાની માતાને બહુ બહુ ભલામણું કરી કર્યું કે, હું મધુરા જહીં છું. ગોરખન છું, પણ બિલકુલ માનશો નહિ. હું તો મધુરા જહીં છું, તે કહેશો કે હું સાવરે આતીશ. જો આ દૈખણા છે તે મેળીની ખરિયથી નાખ્યાં. દૈખણાનો લગલો તેણે મેરે મારી આગળ નંદ માયું ફાડી નાખ્યાં. દૈખણાનો લાલામણું કરી ગોરખન મધુરા ગયો. પ્રભુની દીલા અફળ છે; ગોરખન માતાને, ને જ્યોને સિખામણું દેતો હતો તે ખપતે જ લાગ જોઈ પાછલા નંદલાલ ભરમાં પેણી ગયા, અને ખરમાં અધ્યારમાં કેઠિઓ વચ્ચે ઝ્રપાઈ ગયા. રતે ખાંચા કર્માં ખરાખર વાસી ડેઝી મેળાની મારી પાસે સ્રદ્ધ ગયાં. અને ચંદ્રવલીજુની ખાંચાં ખડ્યાં પોતાને સ્થાને સ્થધ ગઈ. ડેરીમાં જર્યા ઉંઘાં: શીઠાંકે રજુ હળવે હળવે ચંદ્રવલીજુની પાસે ગયા. ચંદ્રવલીજુ આખ્યાં પાની. પ્રભુએ સાન કરી ચુપ કર્યો. હું મધુરામાં કંસનું કામ પડું. હું જોરાને ઘેર આનન્દા નીકદ્યો. કરાણ તે નંદલાલને ઓળખાંપતે હતો, તેને લાયું કે તે જરે આવશે, અને નકોણો અગડો કરશે. પ્રભુએ મારી બેસરો આપીને જીપણ સત્તાવશે. એમ સભળ ઘેર આનન્દા નીકદ્યો. ઘેર આયો ત્યારે રાતના ભાર વાગ્યા હતા. ઘેર આવી કર્માડ જિલ્લાના માતાને ખુસ પાડી, પણ માતા ખોલે જ નહિ ગોરખને બણ્ણી ખૂસા પાડી. ડેરીમાં અભ્યાસો. મારો ગોરખન તો મધુરા છે, તું નંદલાલ આયો છે ઉભો રહે લેતો જ એમ કહી મેળિની ભારિયથી દેખણા દેવા જ માંડયા. ગોરખનનું માયું ફાડ્યું, શરી: પણ લાંગી ગયું. ને બેણોશ થથતે ખથતે ખથ્યો હું વોલતું નથી, ડેરીમાં સમજન્યાં કે નંદલાલ નાસી ગયો. નરાતે સર્તાં. પ્રભુ પ્રેરણિં ઉત્તીને ચાહાતા થયા. તેમના જવાની ડેરીમાને ખરાર પડ્યું. વખત થયે ડેરીમાં ઉદ્યોં, કર્માડ ઉધારણાં તો પોતનો દીકરો ગોરખન લોહિતુલુલાણ અચેતન પડ્યો છે. ડેરી રોવા લાગ્યા.

ચંદ્રાલી આવી રહ્યા લાગી, અને ડેશાને હપ્કો હેવા લાગી. તોશીમા કહે મતે તો ગોરખને કહ્યું હતું કે, “હું સત્તાં આવીએ. રાતે ભાડાં નામ લઈને નંદલાલ આવશે, તું સુખેથી ભારજે, હવે ગોરખને નોંધા ગમનાં લોકો નેળાં અહી ગયાં છે, ને આવે તે ડુશીને ઠપકો આપે છે એટલામાં અચાનક નંદલાલ આવ્યા, ગોરખન સાની દિલ્હી કરી જોલ્યા, “હું ખોડો જોઈ તે પડે, પૂતના વગર રાક્ષસો મને મારવા આવતા તે જ મુશ્વા. તે મતે મારવાનો વિચાર કર્યો, તેનું ફળ તે બોણલ્યું, પરંતુ હવે તું તારુ દિલ્હીમાંથી દેખ કરી નાખી ભારી સાની દિલ્હી કર. પ્રભુ તારુ અખં કરશે. તે તો દ્વારા છે,” તેથું ખોલી ગોરખનાં આજા શરીરે ભરતકથી ખગના ના ચુંબી પોતાની અની દિલ્હી કરી, ને હસ્તક્રમલ રેલ્વેએ. જાસ પ્રભુની દિલ્હી તેમ જ હાથ કરે તથા શું ખડી રહે ! તરત જ ગોરખન ડિલો યથો અને પ્રભુના ચરણમાં પડી, ભાવી ભાગવા લાગ્યો. પ્રભુએ કહ્યું, “ગોરખન હવે તું મધુરા જઈ રહે, ગોકુલ ચાંદીશ નથી.” ગોરખન હતે, “અહારાજ, હું એમ કર્યાઓ હતો, જીવ તો રવાને કરું છે, ને અહી રહેં તો કોઈક વખત દેખાવ આવી જાય, ને મારો લિંગાડ થાય, મારે હું અચારે જ મધુરા જઈં છું. જરૂરી વેળા તેણું પોતાની ભાતને તથા ચંદ્રાલીજને કહ્યું કે આ તો સાક્ષાત શ્રીહકોરણ છે, તેમના નિના વગર દિવાની મતે સાને નોંધતો સામાન લઈ, મધુરા જઈ રહ્યો.” હવે ચંદ્રાલીને પણ પ્રભુ જીર્ણ ભાઈ, પતિ તરફની ખીંક મરી અને પ્રભુ ચાંદીશાનંથી લિલા કરેના લાગ્યી.

(૮) ચંદ્રાલી સાથે લીલા વિલા

એક વખતે ચંદ્રાલીજ પોતાની સાસુને કહી, હાઁ વેચા

ચાલી. સાસુને ગોરખને ચોક્કું કહ્યું “તું નંદલાલની સેવા કરને. પરંતુ સાસુ હેઠી જીવ ન હોચાથી તેને તે વાત રૂચી નહિ. ચંદ્રાલીજની તેની સાથે હરે હરે તે તેને ગમતું ન હતું. વારં વાર ચંદ્રાલીજની સાથે તે અખ્યો કરતી. એકસાર ચંદ્રાલીજ બેરથાનીકળા તેની પાછળ પાછળ ચૂક્પાદીથી ચંદ્રાલીજ નાણે નહી તેમ તમારાનામાં સખાયાંખ પદ્ધતિને કર્પુરી. તોશીમા તેની લગોલગ ચાલી ચાંદીશાનંથી પદ્ધતિને કર્પુરી. તોશીમા તેની લગોલગ તમારાનામાં સખાયાંખ પદ્ધતિને કર્પુરી. તોશીમા તેની લગોલગ આગળ વધ્યાં. અહીં ચંદ્રાલીજ શ્રીહકોરણ સાથે બહ્લા વાંચ એક સંદર આસન પર બિરાળ છે. તેમાંના વેગળેથી સાસુને આવતી હોયો. શ્રીહકોરણ પાસેથી હુદ્દી, તે વેગળી હાથ જોડી. ઉલ્લિ રહી વિનાંતિ કરી ખોલી “ભારી સાસ આવે છે. હવે તેને શો જલાણ આપીશ ? અ ને એ તોશીમારી ફંનેતી કરશે.” પ્રભુ જોલ્યા, હં લગાડે ગેલરાઈશ નહી. હેઠી જીવની ફંનેતી કરનાર પોતે ફંનેત ચાંદ્રાલીજ હેઠું દ્વારા એટાં ચંદ્રાલીને ચંદ્રાલીની ચંદ્રાલીજ હેઠું નથી. તેથી તેને ઓળખી રસ્તાં નથી. એઈ સ્ત્રી શ્રીહકોરણ પસે છે તેથું જુવે છે. તે પરથી અનુભાવ કર્યે છે કે એ ચંદ્રાલીજ હો પણ તે જ પણે સંસુધ ધૂખવાયા મારતો સિદ્ધ તથા તેના પછીન એક આથ પોતે જુવે છે. તોશીમા ગેલરાઈશ પાજા નાસ નાથ છે, પણ પડી જાય છે ને સખત વાગે છે. કિન્તું પણ નાથ એરથે પૂખ પડે છે, “હે ગોરખન તારુ કહ્યું, ના માન્યું, અને નંદલાલ તથા ચંદ્રાલીની પૂછ નેંબા લાગી તેનું ફળ મળ્યું. હું નાનોં” આ વખતે નંદલાલે સિદ્ધ રૂપ તણુંને શ્રીહકોરણ રૂપે તોશીમાને નોંધું અને પોતાના સખાયાંખ પોલાની તોશીમાને એવી

બેર આવે છ. તે દોશિમાને પૂછે, “ચું ચું ? ક્યાં પડી આમાં ?” દોશિમા રોજ જનાખ આપે ? ચંદ્રાવલીજ બોલી, “હુઁમ્યો હું તો મધુરા જઈ હોણે આવી. આ પેસા હોણા દો. તમે મારી પુંડ નોઈ હો. વનમાં ગયાં હોએ, મને અખર મળી છ. પણ પવિત્રની પુંડ નોઈએ તો પ્રભુ ઇની આપે માટે હવે કોઈ દિવસ કોઈની પુંડ નોશો નહિ.” આમ વાતો કરે છે તેથામાં નંદલાલ ત્યાં અધ્યાયાં દોશિમાથી ઉઠતું નથી તેથી મનથી નમન કર્યું, પ્રભુમાં દર્દ રાખી હેઠળ છાડ્યો તેમની ચુક્કિત ઘક. સિદ્ધ તે હોકોરલુ હતા. અને તેની પાજળ ગાય રૂપ ચંદ્રાવલીજ હતી. આજે પણ બહુલાનમાં ગાયની પ્રતિમા છે, તે ખાડુલા ગાય કહેલાય છે. તે ચંદ્રાવલી રસૃપ છે.

પ્રભુએ સિદ્ધ રસૃપ લઈ જણાયું કે મારા ભક્તો ગાયો છે, અને ચંદ્રાવલી ભારી ગાય છે. તેનું રસૃપ મેં સિદ્ધ યાઈને કર્યું. આસુરી જીવને પ્રભુ સિદ્ધ, વાખ જેવા લાગે છે, અને તેવાં દર્શાન આપી ભક્તોરાપી ગાયેનું રસૃપ પ્રભુ કરે છે.

(૬) કામહેવ પરાજય વીલા

ઓક સમયે નારદ ઋવિ પ્રભુ ચુણુ ગાતા, વીણા ભજાવતા જતા હતા. ભારગમાં કામહેવ મલ્યો. નારદજીને પ્રભુના ચુણુગાનમાં મન નોઈને કોષ્ટથી તે બોલ્યો, “અત્યા મારદિયા જીનો રહે, ચું લવારો કરે છે ?” નારદ જીના રહી બોલ્યા, મહારાજ લવારો કરતો નથી પણ પ્રભુ ચુણુ ગાડ્યું. કામહેવ કહ્યું. “મારા સિદ્ધાય જગતમાં બીજને કુષ્ઠર કોણું છે ? ચેં શંકર પ્રભુને પણ વશ ઝાડી છે, તેમજ મોટા મોટા ઋવિ મુનિઓને પણ સત્તાઓ છે. બોલ. ભારાથી બીજે કોઈ મોટા દેવ છે ? મારે તું ભારા ચુણુ ગા, નહિ તો તારી પણ અખર લઈ લઈશ, સમજનો ?” નારદ બોલ્યા, “મહારાજ ! સમજનો,

પણ મારી વિનંતિ ચણ્ણો, પણી જેમ કહેણા રેમ કરીશ.” કામહેવ, બોલ્યો, “કહે, તારે ચું કહેતું છે ? અહ કહી નાખ” નારદ બોલ્યા, મારી વિનંતિ એ છે ને શ્રીગોકુલમાં નંદલાલ છે, “તે કહે છે કે. હું સાક્ષત પ્રભુ છું. કામહેવનો પણ કામહેવ છું, અહા, શંકર અને અન્ય હેવા ભારામંથી ઉપરન થયા છે. કામહેવને પણ હુંપન કર્તાર હું છું. આ છેલ્લા શખ્દ સાંભળતાં કામહેવ લીલા પીળો થઈ ગયો. અને વચ્ચમાં જ કોષ ને ગર્વથી બોલી ઉંધ્યો, “અરે ! એ નંદલાલ કોણ છે ? મને ઉત્પન્ન કર્તારને લોહીં તો ખરો. મને તે નંદલાલ જાણી જતાન, આરે તેનો મદ હિતારવો પડશે.” નારદ જેણથા “હા, મહારાજ ! જો તેને જીતો, અને તેનો મદ હિતારો, તો તો પણી હું આપના જ ચુણુ અહનીશ ગાતો ફર્દ. પણી મને કોઈનો પણ હું રહે રહે નહિ.” કામહેવ બોલ્યો, “નારદ ! અને એ નંદલાલ જાણી જોણતામાં, મેં તેને કદીયે જોયો. નથી. માટે જલદી ભરાભર નિશાનીથંથ્ય ઓળગાણી હે, હું અહીંથી ભારોભાર ત્યાં જાણું છું. અને તેની અખર લાઈ લાઈ છું.” નારદ કહે, “તે રોગ અનશામ છે, કિંગળ જેવા તેજરની છે, આથે મોર્દીજીનો મુક્ત પહેરે છે. અને કોનમાં રૂણજાહિત કુંલ છે, ચુખ્પર બંસી ખરે છે, તેવું કર્મજ નેવાં છે. કર્ણિએ કાળની રાખે છે, પીળું વિજણી નેવું પીતાંનર પહેરે છે, ઉમર સાત આઈ વરસની છે. તેણે દંડનો પાગ બંધ કરી, ગોપરથન પર્વતની પૂણ કરાણી છે. અને કાલી નાગ નાથનો છે, તથા દવાનગ પીંધા છે. તે જ આ નંદલાલ, ખીનો નહિ કરું તેને મારવાને ધણું ધણું પ્રયત્ન કર્યો પણ તે નિર્ધારી નીદરધો છે.” કામહેવ બોલે છે, “હવે ખસ કર એ ભધાને જતારે ગવિદ્ય થયો છે, પણ હમણાં જ હું એતો એ ગર્વ જીતારી રજીં છું. મારી આગ્રા તેનું કર્ણ નહિ. ચાલે, કર્ણા કે મેં સાંભળ્યું છું તે શ્રીસંપત્ત છે. શ્રીસંપત્તનું મારી પાંસ કર્ણ પણ ચાંપ નથી. મારી આગ્રા તે બકરી જેવા થઈ જાય હું,” નારદ જાણે, “હા,

भारत ! साची वात छ. बाजनी गोपीयो। ते दैर्घ्यी येली था, ते तो मे पश्च सांख्युं छ” कामहेव लायी हितावधी

पश्च अंतर्यामी छ. कामहेवने आवतो नाशी पोते गोपीणियान् वरो सामा गथे। श्रीयमुनाज्ञने उनारे कामहेव प्रज्ञने मल्हो कामहेव प्रज्ञुं, “आरे गोपी ! आ गाममा नद्दलाल रहे छ, तेहुं धाम भने भताव, भारे तेहुं जरो काम छ.” अनाख्यपे पोते ओल्हा, “आपने तेहुं धुं काम छ ? ते तो आयारे गोपी यारेव वनमा गथो हरो, ने काम होय ते भने कहो तो हुं आपनी चारे आवी तेते अतावुं.” कामहेव ओल्हो, “भारे तेनी साथे युद्ध मी तेना मह उतारेवा छ, भारे एने जलही भताव.” ज्वालाये प्रज्ञ गोल्हो, “अमे तेना शिष्य छीओ, भारे प्रथम अमने जल्ती यजि तेनी साथे खुशाशी युद्ध करो.” कामहेव ओल्हो, “आस तारे, हुर भारे तेयार था.” ज्वाले कहुं, “मेहानी लाग्छ कर्वी छ, के गढ्युं कर्वुं छ ? जेनी ध्याहा होय ते कर्हो. अने प्रकाश्युं युद्ध हुं जाहुं.” ज्वालाना वयन सांख्याना कामहेव विचारामां पह्यो, “मेहान्युं अहुं थुं अने गढ्युद्ध छ,” तेनी भने तो अधर ज नथी. पश्च न कहीयो तो आपहे जाय भारे, असारे तो अमे तेम जवाब हड्ड्यो, “तेहुं कही योते समाधि यदावी येसी गथा. कामहेव अप्सरा, संहर शीतल सुगम्यम् भद्र मह पव, फूल वगेरेही शोकित वन, वान, तान वगेरे पोतानां पांचे हयियार चलाव्या, पश्च ते ज्वालने ऊप्हो पोते सर्व शक्ति चलाव्या वस्तु निकूल थयो, येहुं लोवार्ह गहुं ते अनभां समन्यो के ज्वाला शिष्य आवो छ ते नद्दलाल कुवो हरो ! पश्च चिता नहीं ग्रेननी लहाइमां तेने ज्वार करावीय. अम विचारी गोल्हो,

“हे ज्वाल ! भाट. आ लहाइमां हुं कायो. तु अद्यो, पश्च हे वेदाननी लहाइ अक्षावो, तेमां हुं तेने ज्वार हरालीसा.” ज्वाल रे प्रज्ञो कहुं, “भले हे वेदाननी लहाइ करीयो, पश्च भारा युद्धने योक्षानी लातुं, कारंडा हे तमारे छेवटे तो तेमनी साथे ज युद्ध करवुं छ. भने हरावे तमारो कहुं दिवस वयो तेम नथी.” कामहेव समज्ञो कु, अने वेदाननी लहाइ आकृती नथी, भारे आम कहे छ. पश्च निकर नहि आप्यो तो नद्दलालने हरावीयो तो ज नारहलु आप्यो युद्ध गाय. भारे बले तेना युद्धने योक्षावे. हुं पश्च नद्दलाल साथे ज लहावा कहुं. तेयी ओल्हो के, “तारा युद्धने जलही योक्षाव.” ज्वाले कहुं, “तमे जरो याक भायो, हम्भां ज भारा युद्धने तेमना सर्व सान भाथे तेहुं लालुं छुं, अम कही पोते याल्हा. योली ज वारमां पोते नद्दलाल यहुं याङ्गा ल, भारा यिध्येन जल्ती शक्तो नथी, ते तु भने धुं अरीश ? भारे हुजु भानज्वर पाङ्गा ल.” “अरे ! काम हुं समझने हुजु पाङ्गा ल, भारा यिध्येन जल्ती शक्तो कामहेव ओल्हो, “हे नद्दलाल ! हुं ज्वार अरीश, अने तारा यन्हुं अडन करीसा.” “टीक त्यारे अराधर तेयार था.” तेम कही, प्रज्ञो अनेक गोपीज्ञन साथे सुहर रास रथवानुं रस कहुं. कामहेव भनमां समन्यो कु, नद्दलाल भरेहुं छ, आ रासमां तो सर्व मारों हयियार छ, अने भारे हयियार लावनां नहि पहुं ते ज्वार हारी जरो. आवी मोहक सामग्री छ, तेमां ते शी रीते ह्यी शक्तो ? हम्भां ज वीयं रथ्यित यहुं जरो, अने ते हारी जरो. पश्च तेना भनना विचार भनमां ज समाझ गया. कामहेव पोतातुं पश्च अग लामरी यूक्यो एषु नद्दलालने तो धुं परद्ध गोपीज्ञनो ये हरावी शक्तो नहि तेना हाथ नीया पड्या. ते तंदन निराश थहुं गयो. तेयार लक्षिताज्ञो धूमटामांयी चुप्ह काही तेना तरक तीरिषी आंख यारी के ते योगाल यहुं भूमि पर पूरी गयो, ने ज्यारे भान आव्यु त्यारे उडीने शर्मही अहने भागी गयो. आ वात तेषु अक्षते

की. अला ओत्ता के तो पूर्ण पुरुषोत्तम गौवेनासी प्रभु छे। तेमनी साथे ते क्यां अद्वैत क्यो ! आपशा सबैना ते पिता छे। आपशने उत्पन्न करनार छे, ज जल्दी शरणे अ, नहि तो भाग्ने भरम करो। कामदेव अती प्रभुते चरणे पह्या, ते भाषि भागि प्रभुओ उदारात्मी तेना पर ईपा इष्ट करी कहुँ, “ज, तुं दाक्षनी लीलामां अभारा तां पुन इषे प्रगट यहस अने तां तने झुँ आनं भवरो。” कामदेव प्रखुना चरणोमां पडी चाल्यो गयो ते ते हिवसथी प्रखुना उष्ण गावा लाग्यो ते आधरे दाक्षनी लीलामां देशभिज्जने त्यां पुन रचे “प्रभुन” नाम्यी प्रगट थयो।

(१०) असी चुरावन लीला।

येक सभये सधाणी गोपिकाओम्बे भणी विचार क्यो, “रथामनी गोरली आपशने अहु ज सतावे छे रात हिवस प्रभु तेनी साथे ज रमे छे, ते तेच अधरसुधारम पाय छे सात्युँ कहीओ तो रथाम तेने वस थह गया छे। तेने लगारे छोडता नदी ते आपणी मरकरी करे छे, अने आपशने चीउवे छे, प्रखुनी अधरसुधानो घरो रस आनं तो ते जोगवे छे भाटे आपणे भणी ते भासी चोरी लाइये ता दीक आनं आवे।

(११)

सभी :- अरी सभी सभ मिल, वह भासी लेहुँ चुराय,
रेत हिनाको अटको, यह भग्से उमी जाय।

मनसुभा गोप :

करतेहीमें भनसुभा, गयो, हुँस्य पं धार,
सभ सर्जियन थह भन कियो, भासी लेहुँ चुराय।

कलो भान धनरथाम आए, भासी दिनैं चोय
नातर प्रजाही गोपिका, हाग्नी ठालैं तोय।
मीरेहुँ वचन-अरे भनसुभा ! कुन तो सही, त भेसी
भासीको ले जात तो है, परतु वाही को चुप्त
रथहीने; और हेघ, वे भोरे आन हू ते धारी है

सभाजः-असी उरसी इटमें, भाज्यो मुह भटकाय;
जही हती भज गोपिका, तही पहुँच्यो आय
भनसुभाने नोह चहुर गोपिकाओ समझ गह के, तेनी प
भेसी छे। एथवे ते लेखाने भाटे तेओ तेने लक्ष्यावावा भागी।

(१२)

सभी वथनः—अरे भनसुभा, तनसुभा, नेक धंतेहा आय;
भाज्यनभिसरी हूँ तोय, लोजन पैट अव्याय。
अनसुभा:-भाज्यनभिसरी है सभी भोही न नेक चुहाय,
अरी सभी कहा कारने, भोसो तु छड्लाय।
सभी वथनः—नृत्य करन हम चाहती, प्रेम सहित हरि ध्यान
यासो ग्रेमी हुँहूँती, ता संग करत नृथगान।

सभाजः-सज्जन सहित तथ भनसुभा नृत्य करत रसभोर,
प्रेम विवस भरनी नियो, भासी लीती चार।

योहीवारे भनसुभाने भान आव्युँ, तोह गोपीते हेघी ॥
ओरहे ते उठिने चालती थयो। भाग्नभां नद्वाल भल्या, “
भनसुभा ! भारी भासी लाल तो, जरा भग्नाउँ, ते आनं
करतुँ भनसुभो इटमें जहे छे तो हुँ मले नहि, भनसुभो अ!
पड्यो, ओत्यो, “भहाराज भासी तो क्यांक पडी गह ?” नह
बोल्या, “पडी शु जाय ! तु गोपिकाओने आपी आव्यो। ते

दोये। सात्युं जेल भंसी ते कोने आपी ?” भनस्पेचा, कांपतो

कांपतो बोल्यो, “महाराज ! सात्युं कड़ुँ छुँ, भंसी लहू कोरिका लाग्यो, भंसी तेमां तरणेण थता पडी गयो। पश्ची यु घुं तेनी भंते लगारे खण्ड नयो। भान आवतां लेयुं तो ला कोरि गोपिका न हती, एक्से उटिरे अही आजुँ छुँ.” श्रीदोरशु समझ गया के, भंसी कोरि गोपिकाचे चोरी लीधी छे। अते ते श्री राधाकृष्ण पासे होती लोड्याचे, ओम विचारी श्री दोरशु गोपिकाचे पासे यात्या अने त्यां आवीने बोल्या :—

काली सभी यह गोर, भासुरी भूल विचारी; लेह गण द्वय भास, भात हम कुनी है तिहारी, नाहिन तुमारे कामकी हो, भंसी हमारी हैँ; अति आहुर हवे भांगली, तुम नाहिन नाहि करेह, भासुरी दीनिये वजनारी.

कड़ुँ हेणी लिया, भासी चुरावनहारी.—२५.

हम जरुना तट पृष्ठ करत है, वह जल वरते आहु, सात सप्ती भिल टेवे चेवे, भंसी लीनी चुराइ. कड़ुँ गोड्युल हुंदत, भंसी हुंदत, हुंदत कुंज आरारी, पात पात वृद्धवन हुंदत, तप्पडुं न भिले राधा घारी.

आले पानडे लेहगा सोहे, लव भरेह मारी. हरिदास भुदंगी सोहे, भोली वृषभानुहारी कड़ुँ. जमुना तीर कड़ुँ यां छक्यां तहां घडे वनभारी, सरदास भलि जाऊ यानकी, तहां भिलि राधा घारी कड़ुँ.

[झुगल वस्त्र]

होकोरशु—हमारी भंसी यारी तुम हो वृथकानुकूलारी. राधाकृष्ण—द्वय कुसा जाते, घारे ! तुम होयो, जहां विचारी. होकोरशु—वह अरली कहां हुराप चांची अतावा, अरली प्रान यारी.

अति चंद्र भेसी प्रिया ! सो तिहारी. राधाकृष्ण—द्वय नहि लक्षण विलोधी, अरली कहां भले उठि होरी, पूछत हो क्यों छेळणिले, को जाते कहां पारी ? होकोरशु—वह भंसी भोहे नेह न विसरे, हीनो वेग अताह, अभ न छिपावे सांची अतावा, विनंति कड़ुँ तिहारी राधाकृष्ण—नहि जाते तुम कहां धरी हो, भासुरी श्रीगिरीधारी.

बारधार कचां पूछत होइ अनगोडन वनवारी. होकोरशु—या भंसीने विजुवन चोलो कहां लग कड़ुँ विचारी, तुम तो युन नहि जानत वांडे चुरनर अुनि हितकारी. राधाकृष्ण—द्वय नहि श्याम छिपावे भुरली, तुमसे कौन विलारी, सांची कहे भुरलिया हमरे, नहि हेणी नेत तिहारी.

होकोरशु—यह भुरली चेरी लक्षित चोहानी, सो तुम राधी लुकाह, भनन तमांही भनवां याको, तुमरेही युनवाई. राधाकृष्ण—सो सध सांची कहो कुवर नो हम कहा जाते नारी, अह युन या भुरली कु माही, कुनी चोही अरननारी, हैस मुसिधाय हेहि तुम भुरली, घारी चोहि जातारी. सभी वचन—भंसी ईमी होत नहि हम नैन हेणी, विता तुमारे साथ काळ, तुम फिरत अपेही. कृत उत जेवत तुम फिरे, कहां ही भूलि गये, सात सप्त वापाही, सो हम नाही य नही लह.

શ્રીકૃષ્ણ- ભસી હમરી હું, કહે કો રાર બાવો;

સંસુરી શુણી મનમાંડી. કાહે કો લોગ દ્વારાવો,
દોગ હસે ચચો કરે, તુમ હેણો મન જ વિચાર;
ચહ ભસી નિયોલક્ષી, તુમ હેતી ક્યોં ન ગંબર.

ભસરી દીજિયે વળનારી.

શખી-દમસોં કહત ગંબરી, આપકી કરત બડાઈ.
માર્દ ગુલચા ગાલ, તો મે જાણકી નહીં
તુમસે કેતિક જ્વાલ હૈ, મંગત હમોં દાન;
ચતુરાઈ તુમ છેતી હું, જાથ ચરાવે ગાય.

શ્રીકૃષ્ણ વચન-યાં ભસીકી ચારિ કહા તુમ જ્વાલિન જનો,
તીન લોક પરતાર, તારો મેરો મન માનો;
ચહ ભસી જોજત ફિર, શેષ વિરચિ મુનિ નાથ,
પરજાહ પરસે નહીં, તુમ કહા નચોવો નાથ !

બાંસુરી દીજિયે વળનારી.

સખી વચન-નંદમહર કે કુંવર માણ, તેથ કૌત પતિની;

જૂલ આચે કહું અનંત, હોષ હમકો નહીં દીન,
લેં લક્ષ્મી સુખપે ખરી, ભસી વડો નામ;
જીન ધર એસે પુત્ર હે લાલ, ઉજરત જિનકે ગામ.
બાંસુરી કેસી હોત, નહીં હમ નૈન હેખી.

શ્રીકૃષ્ણ વચન-ઉજરે ભાયે ભસો હમેં કહા ચાહ તિફારી;
તુમ સરખી લખ આરી, નહીં ધર જોજરારી,
એક લાખ મેરે સંગ ચલો, લખ આવે લખ જથ;
લખ ઠાડી દશાન કરે, તુમ સહંહ ક્યોં લખચાય.
બાંસુરી દીજિયે ઘરાનારી.

૫૬

શ્રામકી ભસી ભન પાઈ. ૧૫૦

ઉદો જર્સોમતિ ખોલો કુલચિયા, કાન્ફદિ હેડ જગાઈ. શ્રામકી ને તુમ જનો ભસી ગઈ હૈ ભસી કે સંગ મેરી, ચેણી હિરોઈ આન ન ચુની, નૈન નાદી હેણી, ચલહું હોર તોથ હેણ બાટાઈ ચરદાસ ભજુ ખાલકૃષ્ણ છીયિ, હોનો પણ એક હી ચતુરાઈ

(શ્રામકી એક સખી ભસી આપે છે)

સમાજ - સુપર સથાની નારિ, હાથ અછી ભસી લાઈ
પૂરન પરમાનં સામરે, મુખહિ ભસી ભળાઈ
લે ભસી જ્વાલિન મિલી, ઝુંઘ અદન છિપાય
ચરદાસ પ્રભુ હારી જ્વાલિન, જીતે જહેરાય

(૧૧) ચોપ્પ લીલા

અન્નકોટ પહેલાં આસો ભાસની અંખારી ચૌથશને હિને રાં

શાજિરિજાની પરિક્રમા નીકળે છે. તે વખતે યશોહાલુ કહેવા કાથું
લાલાને તીને મારથી તો પરિક્રમા નહીં ચાય. નહંજુઓ પદ
તેમ જ કહું. એટલે શ્રાદ્ધકોરજને ચુલાણી ડિંઘાડી, ને ચુલામાં
પસે રાખીને કહું કે ને લાલો જને તો આ જાનતું તેને આપું
અને ભરાખર સરત રાખું. અમે પરિક્રમા કરીને સચારે આવીદુઃ
પીરતિજીએ પણ કહું કે રાખાને લઈને મારથી પરિક્રમા નહીં ચા

“आजे श्री हांडिरण्ड परिक्षमामां गया हशि. नहि आवे ? केम हुँ अाज्ञा नहि ?” बोरे अनेक विचार थया अने विरह ताप थ्यो.

आ तरह प्रकुप भग्या. पोते सर्वे शशगार पहेला छे, कारण आ गोठुं पर्व छे. शाहीवारभां श्रीहांडिरण्ड श्रीराधाङ्गना तंभमां आज्ञा भास्त्रमिनीज्ञने हर्षन थतां भइ ज आनंद थयो, ने बोली उठ्यां, “मेरे लग्युं के आप परिक्षमामां पधायी होसा.” श्रीहांडिरण्ड कहे, “तमारा विना हुं परिक्षमामां कुटी रीत लड़ि. ?” (श्रीहांडिरण्ड एक आसन पर बिराजन्ता.) श्रीराधाङ्ग कहे, “वर्षमां एक दिन जे आजनो छे, ते जुगड़ घेलवानो छे. ते दिवसे ज्वा घेलवायी सर्व पापमांथी मुक्त थवाय छे, तेमां विषय होख्यी आस मुक्त थवाय छे, तमे कहुं लाभ्या छा ?” श्रीहांडिरण्ड कहे, “हा, हा, भारा शरीर पर क्रेत्वामे शशगार हे.” श्रीराधाङ्गमे, चापट मानोली, न नहलालते कहुं के होडामां युं भक्ती छा ? नहलाले भुरली तथा कामण होडामां भुर्खां. पहेलो दाव रम्भाङ्गमे नाम्यो तेमां ते ज्यां अने सुखी तथा कामण लहू लीधी. भीजन दावमां श्रीहांडिरण्डमे सर्व वज्र मुक्तमां. हवे कहुं एक तनिया कहि पर रही. श्रीहांडिरण्डमे ते दाव नाम्यो आ वधते हांडिरण्ड अर्था तो पर लिलाङ्गमे रवामिनीतो पक्ष ऐची कहुं के. श्रीराधाङ्ग ज्यां छे. आ प्रभाणे श्रीहांडिरण्ड सर्व हारी गया. हवे श्रीराधाङ्ग भोल्या के, हवे तमारी पासे कहुं होय तो होडामां भक्ती. ना होय तो घेल अलास थयो. घेर पधारो. श्रीहांडिरण्डमे कहुं के, कहुं नहीं, कहुं आ तनिया छे. भने कहुं वज्र पहेला आपो तो पहेली घेर लड़ि. पीतांबर आपो तो सारे. रवामिनीज्ञमे लिलाङ्गते कहुं के, चंली साडी छे ते आप, लिलाङ्गमे ते लावीने आपी. श्रीहांडिरण्ड शरीर साडी लगेटी भर तरक थाल्या, रसामां विचार थयो के, जो आ बेन घेर

जहां. तो भाता, पिता जरूर पूछयो, रो जप्ताम इक्ष ? तेथा भुक्तम पर ना आवती भारोलार बिरिराजनी कंदरामां पधायी, न ती एक कहरे कुभरेया उपर पोढ़ी गया. पछी भनमां विचार क्यों के, भाता-पिता परिक्षमांथी थेर आवरो अने भते नहि ज्ञाने तो सुहामाने जूँ बद्वे अने पोते भसु भदा हुःभी थरो. तेथी ब्लने रवामे मुक्तम पर तंभमां शेयामां चोद्या. नद्वाल पधायी, पछी श्रीराधाङ्गमे परतावा थयो के श्रीहांडिरण्डमे माझ्या छतां मेरे भरपाई करी तेमते पीतांबर आएँ नहि, न सांती आपी; अने पोते कम्बाते भते चाल्या गया. तेमण्ये तरेत हां भारी के, अरे लिलाता ! ज, तुं श्रीहांडिरण्ड तेही लाव, भारा प्रभुने हुं वारंवार हुँःभ हुँ छु, भारा जेवा भुरभ क्राव. भारायी तेनो विना रहेवाह नयी मेरे भेमनी भागधी स्वाक्षरी नहि अने साडी आपी, पर तो कहुं घोल्या नहि. क्रेत्वा उदार आवा प्रभुने हुं वारंवार हुँःभ हुँ छु, भारा जेवा भुरभ क्राव. तरो ? लिलाता कहे, “पहेला विचार करतां नयी. अने पाजगथा परतावो क्रो छा, तेथी युं वगे ?” श्रीराधाङ्ग घोल्या, “ज, तुं जर्लावा नयी लिलापा प्रथम नद्वालने भरसार्हा भेमना बिना रहेवाह गयो छे न पसे श्रीहांडिरण्ड पर तोहया छे, अरामर भारीधारी नेंतों अतुर लिलाता समझ गए हुं आ रवामे भारी स्वामिनी लाये एसे छे ते नयी. आ तो अीज्ञ व्यह रवामे लागे छे, एटव तथां निरस थह थाली. हवे श्रीहांडिरण्ड तेही क्यां नेवा, ते विचार मध्या लागी रामीनो वधते छे, ते लिलाता विचार करती करती याली लाय छे. प्रभु कृष्णमे ते रवामावित ज बिरिराजनी कंदरामां आजग्न आपी पहेली. तां सुहर फूल नगरे पड्यां, ने ते विचार कुर्खा थह, अने विश्वा लागी. आग्न नगर गह तो तेथी पद्यां मुहर भुक्तम सुगंधिहार फूल नेवा. तेथी लक्ष्याहुते कंदरानी अहं गुडी. तां पर बहु भुक्तम अलीकिं फूल ज छता. जेम जेम नेवा

हेलनी हेड्टी गाई तेम तेम आगण ने आगण चालती गाई. आगण

कुंद्रामां अनेक जलनां भयु, पक्षी कोभण, भुजुर, सुहंडर गान की रख्यां छ, अनेक जलनां फिरफल भुजु ज भुजुर चवाहिट पुरान वगेरे चाहीना चाणमां, सोनाना चाणमां, रेनजटित चाणमां खरेलां छे आ विचित्र- च्यना जेती जेती छे अहर गह तो एक सुस रेखा उपर प्राणताच पोतेला छे. प्रभु हिंदा हता तेथी ओलव्या नहि, अते पाणी वणी, उतावणी उतावणी श्रीराधारु पासे आवी. अही जुऱ्ये छे तो श्रीराधारु अतिशय विरह कुःभ करी रख्यां छे हेलसःतुं लान पशु नथी.

बिलिताङ्गुच्चे कहुं, “हे धारी ! नद्वाल तो एक नवीन कुंभां योद्या छे. कुंभां हौवाची मे कोकाळ्या नहि. मधा अपराध पडे भाटे जोलाव्या नहि. मारी सांचे चालो. तो तमने जलावुं. आ कुंग नवीन छे, हेलु चधी मे ते कुंग कुंधी पशु जेझ नथी. आपणी सवे कुंने करतां ते अधिक सुंदर ने अलौटिक छे चालो जलावुं. श्रीराधारु अङ्गुभरे नेचे जोल्या, “सापी ! त्यां जवानी आरो अधिकार नथी, प्रभु योलाते तो जवाय, हे प्रभु नहि अले तुं तेही लालीश, ऐनी ज आसा हती ते पशु निष्ठा गह.” आ प्रभाणे राधाजना. विरहनो पार रखी नहि, अतिमहान विरह थ्यो. शरीर घरना सवे शशुगार विरहना तापथी शाम थह गथा अने पोतानी ऐने निःगा पडथा.

प्रभु तो अंतथीभी छे, तेमनाथी श्रीराधारुनो विरह ताप कहन थध राक्षो नहि. पोताने पशु श्रीराधारुना ग्रेमने लीधी महान विरह थयो. तेथी ओङ्कर उकीने श्रीराधारुने मुक्तामे धयायी. ते वज्ञते अनेक मुख्यांथी ऐ अग्नि रवज्ञ निक्ष्या. ते ऐतुं भिश रवज्ञ श्रीराधारुज्ञ भनाव्युं, अते सासलीलाना अनुज्ञ भाटे आसा करी. आ तेज रवज्ञ ऐ ज श्री भद्राप्रभुलु छे.

(१२) श्री रक्षितीलुना भानुचं (गवीचं) अंडं

एक समये प्रभु दारकामां सुभरौत्यामां पोद्या छे ते रक्षितीलुना हेलामां पंचो लध वा दोने छ, तेलामां प्रभु “हा हा हा, राधा” ऐवो हुःभो पोकार करता हिने ऐहा थह गथा. रक्षितीलुना आश्र्य पारथ्यां, अते ओल्यां, “हा ! मारा नाय ! धृषी भमा, आपने यु थुं ? शा भाटे आटला अधा हुःभो पोकार को, अने श्रीराधारुने याह कथी, ते कहो” प्रभु योल्या, “धारी, कुःध नहि, ए तो अमस्तुं योलाई गयु श्व छे ते कुःध विचारामां पटी नय त्यारे आम योली जवाय” रक्षितीलुना कहे, “हे नाय ! तमे मते क्हो छा. साची वात कहेता नथी, तेवग समन्वये. तो. अति हुःध बिना हुःभो पोकार चाय नहि. भाटे साचुं कहो.” प्रभु योल्या, “साचुं कुःध तो तमने रीस चार्य, न योदुं लाग्यो भाटे ते वात रहेवा हो तो सार्द” रक्षितीलुने आगह क्यो. अपर्ये प्रभु योल्या, “साची वात तो ए छे के, भने अध याह आव्युं. ए चुध भूलमा हुःधु प्रथन कहुःधु, छतो भूलतुं नथी. ए राखा ! ए गोपीजनो, ए धरोहारु, ए नद्व, ए युना, ए वसीभट, ए वृद्ध वन, ए साधा, ए गायो वगेरे भारी नजर आगण वारंवार शोबा करतां तेही शोबा वधारे छे ? दारकामां शानी येह छे ? ए नेधेके ते सर्व छे. वणी राधा, गोपिकांयो वगेरे तो आहीर ज्ञाति, वगर लजुलां, भुर्प, जंगली हतां. तेमां तमने आटलो भयो ऐद क्यें छे ? तेमना हैप, वस्तु, अतुराई पशु अभारा ज्वेवा क्यायाह होय !” प्रभु हेला ने कहुं, “अरे रक्षिती ! तेमना रुदेहना सामो आग इकाक्षमां नथी. तेम ज तेमना जेवुं उप त्रिलोकमा नथी. लो तमने योदुं न लागे ते सत्य कहेव्यावो तो कहुःधु के राधाजना चरण्यनी पानी भराभर तमारं सुध पशु नथी.

આ છેલ્લા સંદે સાંભળતાં તો રક્ષભિષ્ણુને અતિશય માટે લાયાં
પરતુ અનમારીને બોલ્યા, “મહારાજ ! તમે તો અમારી અરક્ષી કરો
છો, તમને ભરકરી કરવાની ટેવ છે. જો તે વાત સારી હોય તો મને
એકવાર એ શ્રીરામાજના દર્શન કરવો; હું પ્રયક્ષ જોઈ તો આપની
વાત માટું.” પ્રભુ બોલ્યા, “વખત આવે મેળાપ કરવીશ.”

ઉપરની વાત પછી કેટલેક વખતે મર્યાદઘણના નિમિત્તથા
દારકાવાસી સર્વ કુર્સેન પણથી. મજબાથી પણ પરોદા, નંદા,
ગોપીજનો, શ્રીરામાજ વગેરે કુર્સેનમાં આવ્યા હતાં. આ પ્રસંગ જોઈને
શક્મિષ્ણીજને પોતાની એક સખીને આચા કરી કે હું શ્રીરામાજના
તઙુમાં હા, અને શ્રીરામાજને પૂછી આવ કે, શક્મિષ્ણીજ તમને મલથા
ધર્છે છે, તો આપ આસા કરો, તે વખતે આવે.

સખી ગોકુલવાસી જગ્નોના મુકામ તરફ ચાલી. એક સ્થળે
ગોપીઓનું એક પૂછ ગતું હતું, પ્રભુરસમાં મળન હતું. ત્યાં આવી
તેણે પૂછ્યું, “બોનો ? આમાં શ્રીરામાજ કોનું નામ છે ?” જગ્નામ
અહ્યો, “અહીં તો શ્રીરામાજ કોઈ નથી.” અહીં આવનાર શ્રીરક્મિષ્ણીજની
સખી આ ગોપીજનોના ઇપ નોંધ ચક્કિત ચઢ ગઈ. ત્યાથી આગામ
જતાં ભીજું એક પુષ ગતું હતું, ત્યાં પણ તેજ પૂછ્યું, તે જગ્નામ
અહ્યો, “અહીં તો કોઈ શ્રીરામા નથી.” આ ગોપીજનો પહેલાં કરતા
પણ વધારે અંદર હતાં. આ પ્રમાણે એક એકથી અધિકું સુધી
પુષમાં જરૂર પૂછતી પૂછતી નવમાં યુથમાં તે આવી, ને પૂછ્યું.
“એતો ! તમારાં શ્રીરામાજ કોનું નામ છે ?” જગ્નામ અહ્યો, “તમે
કોણ છો ? કયાંથી આવો છો ? શ્રીરામાજ થું કર્મ છે ? તે જોલી હું
મહારાણી શક્મિષ્ણીજની દાસી હું, તે કબીજી પૂછાવે છે કે મારે
શ્રીરામાજને મલતું છે, તો ક્યારે દર્શન મારે આવું.” એક સખીએ
કહ્યું, “જ ! પેલા સામાં સિદ્ધાસન પર જિરાને છે તે શ્રીરામાજ છે.”
સખી અંહર ગઈ, હડ્દત કરી વિનાંતિ કરી, “મારાં રાણી

શક્મિષ્ણીજને આપનાં દર્શનની કંચા છે તો તે ક્યારે પખારે ?
શ્રીરામાજ બોલ્યા, “હે સખી ! તમારા મહારાણી રાજના કુંપરી છે
તમને અમો આહીરના દર્શનની કંચા ચંદ તે નનાધ છે. બળી જ્યા
શ્રીષ્ટશ્રુત અમારી પાસે બિરાજત ! ત્યારે તો અમારામાં કુંપ
પણ રૂપ હતું. અસારે તો આ ચામડી લખડી રહી છે, તે હાડકાં
માણા છે. અમારું રૂપ તો એ નંદું પર સાથે ગણું, આમ છે.

સખી નમન કરી ચાલી. તેણે આવીને શક્મિષ્ણીજને કંચું

“અલે પખારો.” અહીં શ્રીરામાજને વિચાર કર્યો કે, શક્મિષ્ણીજ
દારકાનાં મહારાણી છે. તમને લાયક આ તખ્યમાં કંચ પણ નથ
નેથી પોતાની ધર્માશક્તિ— (ચિત્રાળ) ને આસા કર્યો કે, “ચ

સ્થળને સવેતમ રીતે રણ્ણગરો, દારકાભાં પણ ન લેય તેના રંગ.

કરો.” આચા યતાં ચિત્રાળને તે સ્થળને અદ્ભુત રીતે રણ્ણગા
દીંદું. ચેડીનારમાં શક્મિષ્ણીજ પોતે આડે પરાણી સાથે મળ્યા, પુ
ણજશાહી ઠાડ માઠ સાથે ત્યાં પખાયી. શ્રીરામાજ સામાં આવી
સૌને જાડ સન્માન સાથે અંદર પખરાણી અથાં ઉત્તમ આસનો
સર્વ મિરોન્યાં. આ વખતે શ્રીરામાજના સુખ પર એટલું તેજ હતું
શક્મિષ્ણીજ વગેરે તેમની સાચું નોંધ શકતાં ન હતાં. વળી આ
સ્થળની રણના દારકા કરતાં પણ અતિ ઉત્તમ હતી. આ જાડ ને
શક્મિષ્ણીજને મળમાં વિચાર ચ્યાં કે, ને પદ્ધતામાં આચલા હાઠમાં
રહે છે, તે પોતાના મજદૂરીની કોટોલો ઠાડ રાખતાં હશે ! પ્રભુએ
હિંસે, મારા મુખ્યને શ્રીરામાજનાં ચરણ સાથે પણ ન સરખાવાય હું
કહ્યું હતું, તે અરથર છે. પરતુ હવે એમનો રનેહ કોણ છે

શ્રીરામાજને તેમને સૌને અનેક વિધના રસમય, ભડુર રવાં
પદાંધાણી જોગન કર્યાં, કુંગધી બીડાં આયાં, ખણી મનુહાર ક

भरभाद उक्तिभूल्लो रज भागी, अने ते ज वधते श्रीराधाजुते दारका पधारना आग्रह क्यो। अते तेमना आग्रहये श्रीराधाजुल्ले दारका आवश्युत् निमं वधु क्षम्ब राख्यु. सवे० रज लहू चेताना कुक्षमे आव्यां, ते त्यांथी सज्वे० दारका आव्या त्यारभाद कुरले० समये श्रीराधाज्ञ दारका पधायी० उक्तिभूल्लो तेम्हु अति समान क्षु० पोते पुंचो लहू वा दोणवा लाव्यां, अते छपन लेगनी रसेध करी, आरोग्यानी. उक्तिभूल्लो क्षम्बा हती की० श्राहाकोरज्ञ नेमनी साथे छुनी प्रेमभय रसीली वातो करसी, ते सांक्षण्या भग्नी. पधु प्रज्ञ तो ते हिम्मे पधायी ज नहि० उक्तिभूल्ल राह नेहने याक्यां, ते पछी प्रज्ञने तेवा याव्यां. प्रज्ञ एक स्थाने पेढी रखा हुता. त्यां आ पीतांबर जेची लहू, प्रज्ञने जगाड्या, अने बोल्यां, “ज्ञने माटे तमने अतिशय हुःअ थहू हु ते श्रीराधाज्ञ अही पधायो० छे, ते तमे भक्षना पधु आव्या नहि० यालो यालो !” प्रज्ञ बोल्या, “तमे तेमनी सारो शीते सरबरा करलो, भल्लासा नहि० तेमने तमे हु लेवडाहुः ?” उक्तिभूल्ल बोल्यां, “अनेक प्रकारनी गंगाए॒ करी जभाइचां” प्रज्ञ बोल्या, “भाभशु हही, हुध, छास हुतां के नहि० ते तो गमधानो आहीर लात ऐद्दो ते तेमने अहू ज प्रिय होय, ताङ्ग भाभशु, ताङ्ग हही, ताङ्ग छास तेमने अहू लावे.” उक्तिभूल्ल बोल्यां, ते तो क्षु० न हुत० असारे ताङ्ग भाभशु, हही क्यांची भले ?” प्रज्ञ बोल्या, “हुध तो हशे न ? ते आरोग्यानी० ते जिना तेमने सतोष नहि० यास.” उक्तिभूल्ल क्षु० “आप भक्षना यालो, ससीक्षी वातो करो. हुं हूँ गरम करी लातुं क्षु०” प्रज्ञ बोल्या, ते तो हमेशा भासा झवे० त्यां ते तो हमेशा तिना एक क्षम्ब पधु रही शक्तो न थी० तेम ते पधु भासा विना रही शक्तो न थी०” उक्तिभूल्ल बोल्यां, “हुं हुं कुम योदो छा ? ते हिम्मे तो नियोग हुःअथी रहता हुता. त्यो पासे होय तो रहो शा भाट ?” प्रज्ञ क्षु० छे, “ते ज लीला.” जाओ तमे जलही तेमने हुध

आरोग्यावा, पछी अही आवो.” श्रीउक्तिभूल्ल हृष्मां कुसर, हत्तायची, भरभाद. सुगांधी पदाये नाभी, निश्री पधरानी गरम करी, लहूने आल्या. श्रीराधाज्ञ पासे तेम्हु हृष्म भुँ, अने ग्रेम्यी कोरी भरी भरीने आवश्या लाव्यां, श्रीराधाज्ञ आरोग्याने. त्यारभाद श्रीउक्तिभूल्ल तो रजन भागी प्रज्ञ पासे आव्यां. प्रज्ञ पासे आवी, श्रीउक्तिभूल्ल प्रज्ञना अरप्पा याप्वा अहो, तो नेहु के अरप्पमां फैल्ला उठ्या छे. आ जेतां ते गवराइने बोल्यां, “भद्राराज, आ युं ?” प्रज्ञ बोल्या, तमारी सेवानी आसी, तमे हिं हिं हृष्म श्रीराधाज्ञने आरोग्यान्हु तथी भासा पो फैल्ला थथा. करियाको, हु तेमना हृष्ममां छु० हुवे तमारा भननो संसाध गयो ? जातां, लधारे जात्री करवी होय तो ज्यो श्री राधाज्ञ पासे.” श्रीउक्तिभूल्ल श्रीराधाज्ञ पासे आवीते ज्वे छ तो श्रीराधाज्ञ पलंग पर पोद्यां छ अने हुंडी उपचार हृष्म पर करी रखा छे. श्रीउक्तिभूल्ले आम करवान्हु करण्य पूछतां श्रीराधाज्ञमे क्षु०, “ज्ञहेन ! याडा वधत पर तमे भत हृष्म आपी गया० ते वज्ञ गरम हुत० पधु तमारा ग्रेमने वस हुं ते पी गहू; पधु मारो हृष्ममां सदा श्राहाकोरज्ञ निरान्हु छे. तेमना चरणमां आ गरम हृष्मया फैल्ला उठ्या. हुवे तनी शांति माटे हु आ हुंडा उपचार करी रही छु०” श्रीउक्तिभूल्ल तो आ प्रेमनी वातोया ज्वत्य थहू गया० प्रज्ञ पासे आनी, जुने छ तो आपशीना चरणेभाया दोहला जेसी गया छे

प्रेमनी आ परिसीमा ज्ञेताने श्रीउक्तिभूल्ल चिकित थहू गया० तेमां ग्रेमनां अहु आवी गया० पोताने भातरी थहू के श्रीराधाज्ञ रूपमां, तेम ज ग्रेमां सबी रीत चेताना करतां हुतम ज छे. तेवा ग्रेमने प्रज्ञ केम भले ? आहुं जज आहुं ज हशे, ऐद्दो प्रज्ञने वज याह आवे तेमां शा नवाह ! थन्य छे नग्नने तथा वरगाना निवासीने ! मनव्या श्रीउक्तिभूल्ले सो वर्जननोते साठांग हुवत करी लिला.

(૧૩) ગોપી બહેયની દીક્ષા.

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણદુરારકામાં રહે છે રોજનનાં અતે કાખમાં
પ્રશ્નાલ રહે છે. આઠ પદરાણી તથા ભીજાં રણી ગળો એમની
સેના કરે છે. જ્તાં જરા નિવૃત્ત યતાં આપણીના ભજને, તેના સુખને,
ગોપીનેહને વારંવાર યાદ કરી, નિઃખાસ મુડે છે અને વખણું કરે
છે; આંખમાં પ્રેમનાં અનુ પણ આની જાય છે. શ્રીકૃષ્ણદી વગરે
પદરાણીઓને આ નોઈ તાજુણી લાગે છે. કોઈ વાર પ્રચલ પૂજે છે
કે યું અમારા કરતાં તેમનો પ્રેમ અધિક છે? અમારા કરતાં તે
વધારે ચતુર છે? અમે સર્વો આપણી આચા પ્રમાણે ચાલીએ હીએ
તો પણી અમારામાં યું ખાની છે? આચ જ્તાં, પ્રકૃતે તો પજસુખ
વારંવાર સાંભરે છે, અને આંખમાં અનુ આવી જાય છે.

એક સમયે પ્રભુ શ્રમનો વગરેને સંભારી અનુપાત કરતા
ઓલખા લાયા “હે ગોપીએ! હું તમારો સહા નાણું છું. એ
શરહની રત્ની, એ રસસીલા, એ ચસુના, એ બંસીલા, એ શરહનો
ચંદમા હવે કરી અને કથાં ભલશો? એ તો રસનવત જરુ રહ્યું, એ
ચુંઘ આગળ ચૌહ લોકનું ચુંઘ નકાસું ચુંઘ છે. હે ગોપીજનો!

તમારા પ્રેમની અનુભિ છે. મારી ભરી સાંભળતે રાત હોંસ જ્તાં
પણ તચે પતિ, પુત્ર, ધરમાર વગરે તજને ઉભ્યતની માર્ગ મારી પાસે
વનમાં હોડી આવ્યાં. તચે લોકની તથા કુળની લાજ પણ તથઘલાની
ચેહે તેણી નાખી ધન્ય છે તમને! ચેં તમતે ધીર પાજા જવા આટે
ધર્મબોધ કર્યે, પણ ભાર પ્રેમને વશ ધર્ય તચે પાજોં ન ગયાં. ધન્ય
છે તમારસ શુદ્ધ પ્રેમને!” શ્રીકૃષ્ણદી વગરે જોલી ઉઠ્યાં.. “તમતે આ
શું ગંડપણ વળણું છે? અમે તેમના કરતાં વધારે પ્રેમની કસોદીઓ
ઉત્તરિણું નહિ અમે તો પરહેલી તમારી રણીઓ છીએ, તમતે કોણો
ડર છે? આપ જ્યાં બોલાતશો તથા, ગમે તે સમયે | અગો આવ્યાં.
બળી આપ રાસની વાત કરો છો, પણ રાસ એ તેમના કરતાં

અમે ઉત્તમ કરીણું. આપ ક્રોદી કરી જોશો, તો આત્મા ધરો.”
પ્રભુ બોલ્યા, “તમારાથી તે નહિ બને, તેમની કક્ષામાં અતે તમારી
કક્ષામાં બહુ ફરાણે. તમે રણીઓ એઓથ પડામાં રહેનારી ન તેઓ
દેંબ બેર હણી વેનારી.” શ્રી રક્મણીજ કહે, તેથી તો કહું છું કે,
અમે રાજું વરીઓ નોટલી ચહુરાઈ તેમનામાં ક્યાંથી હેય? તમે
પાલ્લા કરશો. તો ખાત્રી ધરો.” પ્રભુ બોલ્યા, “કુંબ નોઈયું.”

પછી એક સમયે પૂર્વિમાની રાત્રી પ્રકારી રહ્યી છે તે સમયે
પ્રભુ દારકાથી ચાલીને શોર દ્વારા ગોપી તલેયામાં આવ્યા. અતે નારવર
દેશ ધારણ કરી ભરી ભરી જન્મની અંસીનો નાદ સાંભળાને શ્રીકૃષ્ણદી
વગરે આઠ પદરાણી તથા ભીજ સર્વો રણીઓ અની હનીન રસનું
તેણું સમજુ ચાલી. પોતાના પત્તિનો અંસીના સંસીના કષ્ણ અંતિ “નુરતાથી
ચાલી, પરંતુ થોડો જર્તાં જ સ્રદ્ધામાં ચોતરા પર, બકુંદેન ઉચ્ચસેન
વગરે મોટેરાણેતે બેઠોલા જોશા. એક તો રાતરો વખત ને વળી
ચુંગાનોની હાજરી ! તેથી લાગ્યું કે, આપણને પૂજરો તો રો રાજ્યા
અંપાણું ? કેં સુધ્યાં નહિ એટલે ભરી લોકલાજથી ખાડા વળ્યા
મહેલમાં પેસી ગયાં, કોઈ જરૂ રક્ત નહિ પ્રકૃતાં ભરી ખાડા વળ્યા
નહિ. રણીઓ તો જરૂ રક્ત નહિ, પરંતુ ભરીનાં હેઠ ગોકુલ
પહેંચ્યો. બજનાં ગોપીજનોનાં અન ભરીનાં અતે તેમાં આવતા
રસના સહેશાને સમજ ગયાં. માંહો માંહો કહેવા લાગ્યાં
મારે ધાદ કરે છે. ચાહો પ્રાણ્યારા આશે રસ રમવા” ગોપીજનોનાં
અનેક ધૂય પ્રકૃતાં પ્રેમચોંગ બધો કોઈ મહાન કિદ્દની રિષ્ટિ પ્રાપ્ત કરીતે
હેઠ દારકા ધરી આવ્યાં, અતે અદ્ભુત રસ કર્યો પ્રેમને પ્રભુ દારકા
ધર્માયી, સર્વ રણીઓને હણ્યું, “તમે રાત્રે ભરી જાંબળા નહિ હોય!
સાંજની હોય તો આચા જિના રહ્યો નહિ, તમે ડુંગી ગર્દાં હણ્યો !”
પ્રકૃતાં આ અમ્ર લચન સાંજની શ્રીકૃષ્ણદી કહે, “મદાનાજ ! ચાંનગા
તો હણ્યી, અતે શશ્વાર સણું નીકળાં પણ હણ્યાં, પરંતુ ધારું ગર્દાં
તો ચેતસ ઉપર ઉત્ત્રેન દાઢા, વસુદેવ પિતા વગરે વડિલગનાં બેઠોલા

हता. अमे कुनि रीते आवीचे ! तेथी शरमाहत पाणी हमी. अमे वडिलो बोधी राते भार नीक्कितां नेहू, कारण पृष्ठ तो शो जन्माद हळ्क्के ?” प्रभु कहे, “मे प्रथम व अजु हत्तु कै, तमे ओआख पडवे रहेनारी राणीच्या छा, तमाराथी लोक्खाज, कूण्डलाज ना छाइय.” श्रीरक्षिणीज बोल्यां, “आप्नो संकल्प निष्ठा गेया हशी, पश्च अमे लायार छीच्ये, क्षमा भागीचे छीच्ये.” प्रभु बोल्या, “भारो संकल्प काष्ठपृष्ठ नप्ते निष्ठा ज्ञतो नयी. मारे तो लोक भने संस्कृत्ये कहे छ. तमे तो ना आवी शक्या पृष्ठ वर्जनां गोपीजनोना यूथने ज्ञुदुं रा भाटे बोलो छा ? क्यां वजते क्यां दाका ! ओरले हूर शी रीत आवी शक्या !” प्रभु कहे, “ना भानो तो यालो प्रस्तु नकरे ज्ञायो, आज रात्रे इरी खासी घटावीश. तमे आवनो, ने नोने. प्रभुच्ये गत्रे झरो खासी घटावी. श्रीरक्षिणीज वगेरे सवे० राणीच्या अनी क्नीते पहेंची गह ने प्रभुने भली श्रीरक्षिणीज बोल्या, “प्रभु गोपीच्यो तो कंक्ष हैमाती नयी” प्रभु बोल्यां, “ज्ञायो,

सांखणो, तेच्या होडतां आवे छ. पवनवेगे आवे छ, तेभना आववातो संसारो पवन नेवा संबलाय छे. आम वात करे छे, त्यां तो गोपीच्योनां कुऱ्ऱने अुड हैती आव्यां. श्रीरक्षिणीज वगेरे ताजुळ थष्ट गयां. आजले गोपीजनो एक्सी रास जुऱ्ऱे छे, ते श्रीरक्षिणीज वगेरे रास रमे छे. रास पूरो यातां श्रीरक्षिणीज बोल्यां, “नाय, रास कुवो रस्यां ?” प्रभु कहे, “अहु सारो रस्या” श्रीरक्षिणीज कहे, “गोपीजनो नेवा कै तेथी सारो ?” प्रभु कहे, ते तो श्रीरक्षिणीज पूछे. “श्रीरक्षिणीज श्रीराधाजने निनंति करी पृष्ठा लायां. सायुं कहे, अमारो रास कुवो लायो ?” श्रीराधाज कहे, “पराणीच्योना रासमां यु भासी होय। अहु सारो,” श्रीरक्षिणीज बोल्यां, “ज्ञायो. सांखणो भासाराज !” प्रभु बोल्या, “ते तो तमते सारां लगाऊना कहे छे, कंक्ष पौताना रास करतां हुतम कहेनां नयी, तेम तेना नेवा छे, कंक्ष पौताना रास करतां हुतम कहेनां नयी, तेम तेना नेवा छे, कंक्ष पौताना रास करतां हुतम कहेनां नयी, तेम तेना नेवा छे.

(१४) सांखनी भाष्णा.

एक समये श्रीराधाजनीज फूरतां फूरतां यांदा वालीजने त्यां अहु याह्यां. ते वप्ते यांदावली सांखी पूरता हता. श्रीराधाजनीज पृष्ठ्युं अहु ज्ञायो !” यांदावली जोली, “हे प्राण धारी ! हुं सांखी पूरं झुं. पछी तेनी पून करीश, आ वत आपशा भाटे उत्तम छे.” श्रीराधाज जोल्यां, “आ वत करवायी शो लाल ? यु (५७) भणे ?” यांदावली जोली, सारे धर भले, धाढी सासु तथा डाढो ससरो भले, मनगमतो पति भले, ऐसा भले, गृहस्थीता सर्वं अभी भले. पति आपशा कुवामां रहे, अने लांडी आनंदमां ज्य, कहे भहेन ! मुं उत्तम वत छे ?” शी राधाज बोल्या, “अति उत्तम वत हवे श्री राधाज योताने सहन आव्या ने भाता श्रीतीजने अधी वात करी. भाताच्ये कहु, “लल वत करा,” अनेह दिवसे अव्या श्रीरक्षिणीज बेगी थष्ट, अने हूके ते वत करवा नक्की कहु. शी

સપ્તીઓ બેળા એ શ્રીયુનાણ નાહદા ચાલી. આતી ગાતી આનંદ કરતી શ્રીયુનાણ પર આતી, ત્યાં સ્નાન કર્યું. પછી કેટલીક સપ્તીઓ ફોલ વીણું ચાલી, તે કેટલીક સપ્તીઓ શ્રી રાખાણ નાથે જેવે આતી.

ફોલ વીણુને પછી આભતી સપ્તીઓને માગમાં પણ ભલયા, તે તેમણે ચંડાવલીજીને પ્રછું, “હે સપ્તી ! કયાં એ હાજર હતી ? ચું લેવાના હતો ? વખત બોડો છે, તે ગામ દૂર છે, મારું તા પાછું લાવો ?” ચંડાવલી બોલી, આં “આ તો ફોલ છે, અમે સરખી ચાંપીઓએ સાંકૃત્તું મત કર્યું છે, તેના પૂજન માટે અમે ફોલ લાવાં છીએ. શ્રીરાખાણ પણ આ મતમાં સામેલ છે.” પ્રછુ બોલ્યા, “તમારા મતમાં આનંદ લેવા હું આપું ?” ચંડાવલી બોલી, “મહારાજ ! ત્યાં તો સપ્તીઓ જ હોય. પુત્રું કોઈએ ન હોય.” ચંડાવલીજી એટથું કહી ચાલી ગઈ શ્રીઠિકોરણ સમજું ગેયા કે, ચંડાવલીએ પોતાને આવવા ના કહી નથી, પણ ઉદાહરણ આપી શ્રી રૂપે આવવા કહ્યું છે. તે પછી પ્રલું એક કુંતિ નવલકિશોરી બન્યા, પોતે સોણે શશ્વગાર સજી લીધા અને ફોલના સોણે શશ્વગાર જનાની તે તથા છૂટાં ફોલ મોદા રોખલામાં ભરી, રેખમી બસ્થથી હાંઠી, ભાયે લઈ, માતણ વરો જરસાને પથથાયે, ત્યાં આતી ગલીમાં ચુહંડ લાંઘા રાગથી બોલતા ચાલ્યા, “કોઈ ફોલ લ્યો, ફોલ કે શશ્વગાર લ્યો સોખિન જીવન જીવને લહાવો લ્યો. મેરે ફોલ અનોએ, શશ્વગાર અનોએ,

હોઈ એણથી નહિ જન્ય માટે લાંઘો ધૂમયો પણ તાણ્યો છે, ને ગલીએ ગતીએ ચુહંડ રાગથી પોકરતા માલણું વરો પ્રલું શ્રીરાખાણની પોરીમાં આવ્યા. એડ સાંકળતી શ્રીરાખાણ બોલ્યા, “હે સપ્તી ! જન, ને તો અરી કોણું ફોલ લઈ આવ્યું છે ? રાગ તો ચુહંડ છે.” લક્ષીતા બધાર આવી જુએ. છે તો અનોએની માલણું દિલી. લક્ષીતા બોલી, “હે માલણું ! આમ આવો. મારા શ્રીરાખાણની તમારા ફોલ તથા શશ્વગાર સવે જરીદો લેવા તેમની પાસે ચાલો.” માલણું બોલી,

“અહેન ! આ ગામમાં રચિંદ કોઈ નથી, મારું એક પણ ફોલ ‘નાના’ આજે મારો બધો હિવસ નકારો ગયો, હવે તમારા શ્રીરાખાણનું શું લેવાના હતો ? વખત બોડો છે, તે ગામ દૂર છે, મારું તા પાછું ધેર જડિં છું.” લક્ષીતાનું હું, “હે સુહર અનોએ માલણું ! તમારો બધા રચિંદા છે, તમારાં બધા શશ્વગાર લઈ લેશો, માટે તમે મારા શ્રીરાખાણની પાસે જરૂર ચાલો, હું તમારા બધા શશ્વગાર અપાણું હક્કા કરો. મને લલાલી શું આપરો ?” પ્રછુ બોલ્યા. “તું માગાણું તે આપીશ.

લક્ષીતા આગળ અને પાછળ માલણું વેણે પ્રછુ ચાલ્યા. શ્રીરાખાણ એક ચુહંડ આસાન પર અનોન્યા હતા. તેમના સમક્ષ માલણું વંદુ, પ્રલું હાજર થયા.

શ્રીરાખાણ : હે માલણું તમારું નામ શું ? ક્યા ગામમાં રહેયું છો ? તમારાં માતા-પિતા કોણું છે ? તમારા જેણી સહેર માલાં-હજુ રૂધી મેં કંધાં પણ હાડો નથી.

માલણું : મારું નામ શથામાં છે નંદગામમાં રહેયું છું. માશુ માતા જક્કાન છે ને પ્રિતાં નામ પરમાનંદ માતી છે.

નંદગામની માલણું જાણું શ્રીરાખાણને બહુ જ હરખ થયો. પહુંચું એક ચુહંડ રેખમી કફડા પર અનોએ માલણું સર્વ શશ્વગાર હારાંદું ધરી દીધા. શ્રીરાખાણ શશ્વગાર જોઈ હુશી હુશી ચાહ ગયા. હુશી એકથી ઉમેદા શશ્વગાર ગુણેલા છે.

એકથી ? શ્રીરાખાણ : હે ખેણ ! આ શશ્વગાર તેમે ગુંધાં છે કુંબાં.

માલણું : મે જ ગુંધાં છે, તમારે જે લેવા હોય તે જરૂરી પતિ વણી. માટે જરૂરી કરો. મારું જુદુ જરૂરી જરૂરી છે.

श्रीराधारु : आजनी रात तो तमे अहो ज रही जायो, तभारो भवा शष्गार में लह लाखा, तेना भवामां तभारे फरीते इह वयवा आवतुं नहि पडे तेहुं अद्गाक धन आपीय. निरति ऐसो। आजनी रात अहो ज रहो, सबारे जनो.

भालूः : मारी साकुनी तथा पतिनी रेण बगर हुं आणि छुं माटे भाराथी रहेवाय नहि. मने वटे. हुं तभारा गुणान भड्ड हिस्था सांकणती हती, तेथा तभारा दर्शन माटे ज इल वेचवाना निभित आणी छुं हुं कुं ऐसानी भूझी नया. घेमनी भूझी छुं. तभारो घेम मने अहो लह आवयो. छे.

चंद्रवली : अरे भावाय घेर धेर इल वेचे छ अने ऐसानी झूणी नयी घेम कहे छ ते केम भने? मारा श्रीराधारिणी तमने अद्गाक धन आपे छे. तो वधु उतावल चा भाटे करो छो? घोड रात रही जायो.

आ वात चाकती हती तेत्वाभां गीतिल यां आणी चढ्यां. तेभणे पूछतु, “हे राधा आ भालू तोषु छे? क्यांची आणी छे?”
श्रीराधारु : हे वाहाली भाता, आ भालू नहामनी छे. जुओते कुट्ठा सुहर शष्गार बनाऱ्या छे, हह करी छे. तेनो आजनी रात तेनो रहेना कहु कुं वधु ना पाहे छे.

द्वातिल : नहायनी भालूने घेम जव! ना हवाय.

(भालूने) तभारे रात रहेवुं ज वडो (चाल्या जाय छ.)

श्रीराधारु : हवे तभाराथी नहि जवाय. राष्ट्रीजनी आता भानवी वडो.

भालूः : प्रकु कृच्छा हवे भले मने घेर कृपको भलशो तो वधु आजीरा. लाचार हुं, राष्ट्रीजनी आता भारे पाणी ज नोक्को

श्रीराधारु : हे भालू! तमने शष्गार करतां आवडे छे ते? **भालूः :** हा ज. सरस शष्गार करी आपीय.
पछी ओळे ओरामां श्रीराधारु भालू तथा ललिता त्रय जाणु बें अने श्रीराधारुने इलना शष्गार एवा तो क्यो के श्रीराधारु पुरा अस अस.

श्रीराधारु : तमने सांगी पूरतां आवडे छे?

भालूः : हा, सरस सांगी पूरी आपु. पछी जीतने याहननी आरथी लीपीते सुंदर इल गृहीते उत्तमोत्तम सांगी पूरी दीधी.

श्रीराधारु : तथा तेमनी सन्द सामन्यो. पुरा पुरा अस अस.

त्यारभाद सन्द सभीओयो सांगी पूजन क्युं. तथा जोग धयो. चाहीवार पछी प्रसाद आटयो, ने कर्व सभीजनो. श्रीराधारुना आसा लह, विदाय थायां. हवे लहिता, श्रीराधारु तथा भालू ए वधु जण रस्ता. एक ओरामां नवेनी शेखा करी. वन्ये भालू, एक भाज्यो श्रीराधारु, भीजु भाज्यो ललिताल एम वधु पोदाया. श्रीराधारु कहे, “हे सभी एक वात कहो” भालू ऐली, “तमे कहो.” श्रीराधारु कहे, “अमने ते शु आवडे? तमे सरस वात कहो. उंख आवती नयी. माटे कहो.” भालू कहे, “हुं वात कहु तेनो उतर आपो तो वात कहु.” श्रीराधारु कहे, “आवडो तो ज्वर उतर आपीय,

भालूः :

(होहो)

उ पण हो मुख, तीन नेन हो, ज्ञाने उक ज एक; ते ज्ञान कोन जननीयो, जोलो सुगान धरी देक.
श्रीराधारिणी भण्डा विचार क्यो, वधु उतर सज्जोया नहि सा गोस्ता, “तमे कहो, मने गम पडती नया.” भालू कहे, “हायां कहो तो कहो.” त्यारे श्रीराधारु कहे, “हायां केम कहेवाय?” त्यां

માલણ કહે, “હાયો ના કહો તો હિતર આપો, નહી તો હાયો
કુભુલ કરો.” છેથે શ્રીરામાજુંએ હાર કુભુલ કરી. માલણ કહે, “હેઠાં
પર ઘેરેલા શુફાચાયણ એ હિતર છે”

(३)

પે ચિરીને જ્ઞાનાં રહ્યો, હવું તેનું નામ,
લક્ષ્મી નેની અહેન છે, એવો સંદીર કામ ?

रेखांजल्यम् अहु विचार कर्ये पश्च उत्तरं गृहयो नहि, छेष्व
भीम वप्ते पश्च थाकीरे हार कथ्वा करी मालव्य कहे ते तो शांख्य.

६५ मालवृष्टि प्रकृत्या वस्त्रारे वारे कुप्त रहो शक्य नहि
 श्रीराधाङ्गे लेटवानी उड़ता वधी अने तेथी निरह वेदनामां विशुद्ध यह
 श्रीराधांशी नाचे पडी गया. श्रीराधाङ्ग गलराया, जोल्या, “ऐक्षम आ
 यु यथु? उठ, उठ लकिता। ने तो भरी.” लकिताए चर्व शरीर
 उपर हाथ देस्वन्यो तो छातीना भागमां कह नशाहु, ने श्रीराधाङ्गे
 बोलाया. श्रीराधाङ्ग तुरत छिल्यां अने तपारुद्धं तो चोलीनी अहंर वेष्ण
 भालूम पडी तुरत ज्ञ खाची यह के आ तो भालू इप्मां श्रीहोडेरु
 पर्मायो छे. तुरत ज्ञ प्रकृते खलंगमां सुनाई चारत्वार करपा लम्हा. प्रकृते
 केटलीड वारे भालू आयुं, अही श्रीराधाङ्ग तो रडवा ज्ञ लम्हां हतां के
 प्रकृते भारे भाटे आटलो भयो परिश्रम लेवा पडयो ते भाटे घोते क्षमा
 मागवा लाग्यां, श्रीराधाङ्ग बोल्या, “हे नाय आप आटलो भयो
 परिश्रम चा भाटे ल्यो छा?” श्रीहोडेरु कहे, तभारी चम्पी चंद्रामलीये
 सांगी जेलमां पुरेखन आववा ना पाही तेथी भालवृष्टि धरखुं पड्युं
 वणी तमे भारा दिना सांगी पूने पृष्ठ नहि, ते भाटे हुं आव्यो.”
 श्रीहोडेरुल्ये ते रात्रे अटेक रवद्दे अनेक गोपीजनोते त्यां भास्तरी,
 आनं रसतुं पान करी, सवारे नहुगाम ज्ञव नीकल्या. विरहदशामां
 माता जशोदा शोभतां शोभतां सामां भस्तो, प्रकृते प्रेम्यी गोहम्मां

(୧୫) ପିଲାଗ୍ରୀ ଶ୍ରୀ

દીકોણ નહરાળજુને ત્યાં ભાગભાવથી કુઆરિકાઓ। માતૃચરણની આરાથી તુલાવે છે. ત્યાં શ્રીરામધાર, વિશાખાજ, લલિતાજ વગેરે સખી પણ નહરાયજુને ત્યાં આવે છે, અને આજાબાવથી સર્વ પ્રજુને તુંબાવે છે કુંજસદનમાં ડિશાર ભાવથી ભગભક્તો તુંબાવે છે વળી અરસાને શ્રીરામધાર પોતાની સખીઓએ સાથે ઝુલે છે. એવ વખત લલિતાજ વગેરે સખીઓએ ઘુસનાને કિનારે કંદમ વુલના પડ્યે દીકોણો ભાંધ્યો છે. ને લાતાપાથી ચુંદર રીતે શશ્યગાંધી છે. તેથલામાં ફરતા ફરતા શ્રીરામધાર આવી ચડે છે. ને પણ છે. ‘આ શ્રી લીલા કરો છો કો ?’ શ્રીરામધાર આવી ચડે છે. ને પણ છે. ‘આ શ્રી લીલા કરો છો કો ?’ લલિતાજ કહે, “મહારાજ ! દીકોણો રંધ્યો છે ત્યાં અમે સર્વ સખીઓ કુલીયું :” પ્રભુ જોલથા, ‘મને એ લીલાનો આનંદ આપશો કે કેમ ?’ લલિતા કહે, “પ્રભુ આ તો સર્વ સખીજનો છે. ત્યાં આપ કુંબી રીતે આવી રહો ? લાયાર છીએ.” પ્રભુ જોલથા ગયા, દીકોણો તેથાર થઈ ગયો, ને શ્રીરામધારની પંચરાત્રિ સખીઓ ઝૂલાવના લાગ્યા.

આનંદ ગીત ગવાઈ રહ્યાં છે, વિવિધ પ્રકારની રાગરચ્છાણી
તથા બાળજીવ પણ બાળી રહ્યાં છે શ્રીરામાણ જીલે છે, પણ મનમાં
પુસ્તકાનુભૂતિ આપુરતા છે કે જો શ્રીહારિસાગર પહૂંચે તો ઘરેણ આનંદ આવે

“હું લાદા
નહીં લીધા, ચુંબન કર્યું, અને પ્રેમથી
પૂછવા લગભાં,
તું રાત કથાં રહ્યો ?”

प्रथम : माता ! ये गाथ बिरिसाज तरक गह छती, तेनी पाषण हु गयो, अने बिरिसाजने आगह लोध रात त्यां रखो छती। माता भारी फिकर तमारे कुरवी नहि नदभाभाना राजमां शी फिकर होय !

मना मनोरथ पुरवा भाटे पेते एक सुंदर सुंहरीना रेपां साला रहा श्रीयमुनाज्ञना सामे किनारे हीडोणानी भगवार सामे आवी उला रेला झुकतां झुकतां श्रीराधाज्ञनी दिल तां पडी. सुंदर कोइ सभीजने नेह लविताज्ञने आसा करी, “हे लविता ! नाव लधो न. अने पेली सुहर सधीने तेवी लाव लविता नावटी लहं चाली अने जिनाति करी, श्रीराधाज्ञनी आसा प्रभावी ते सुहरीने प्रभरावी लावी लविता उप नेहो यहित थध गह. जने नामांयी उतरी श्रीराधाज्ञने आसे आवांया.

सभी उपे प्रभु जोल्या, “हुं तमारी साथे नहि जेसु, पष ने आपनी हँच्छा हाय तो तमारा सामे न भारो हीडोणो भांवो, तो तेमां ऐसी तभने हीयका नांभवानो लाहोवा लह, अहुं आनं आवशो” श्रीराधाज्ञने आ लीला गमी, अने तुरत न जीने हीडोणो तथार कराल्यो. प्रभु तेमां जिराज श्रीराधाज्ञने हीयका नाभवा लाभ्या. धीधेधीमेथी शब्द करी आस्ते आस्ते हीडोणो वेग वधतो गयो. श्रीराधाज्ञ गलराणा लाभ्या. अने आ नवी सभीने “राख राख” कहेवा लाभ्या. सभी कहे, “अरे यारी शा भाटे गलरायो छो ? हीडोणानी तो आवी न भग छ,” हीडोणो देव अतिश्य वध्या. श्रीराधाज्ञ ते सहन करी शक्यां नहि. अने तेथी अतिश्य गलराया, सभी उप प्रभु तुरत न योताना हीडोणामांची श्रीराधाज्ञना हीडोणे प्रधायो. अने श्रीराधाज्ञने अंकमां लहुं तुंनन कहुं. प्रभुनो रपर थां ज श्रीराधाज्ञ अभने ओणाभी गयें, अने प्रभुने अंकमां लह अनेक रसदान लीला करी. कोइ वर्षते युगल स्वरपने सभीओ अुक्कावे छ तो कोइ वर्षत सधीमोने प्रभु अुक्कावे छ. तो कोइ वर्षत प्रभु. श्रीराधाज्ञने अुक्कावे छ, तो कोइ वर्षत श्रीराधाज्ञ श्रीडोरज्ञने अुक्कावे छ, आम प्रभु अनेक प्रकारनी आनं लीला करे छ.

(१६) नवरात्री तथा हौरीनी शिवा

नवरात्री एटले आसो सुही १ थी आसो सुही १० सुधनी आ लीला छे. भजलक्तो प्रभु भिलन अथो आ लीला करे छ. एक समये प्रभुना विरहमा श्रीरात्रामिनीज अति आङ्गन-याङ्गन थां छ. ते समये यंदावलीज्ञना कहेवाची श्रीराधाज्ञामे तेमां सधीजनोमे ते वत यंदावलीज्ञना कहेवाची क्षुं ते हिन्से नवीन अंदर कुटे छे. तेथी क्षुं. क्षुं १ ते हिन्से नवारा लाल्या हडेकै ल्हा भाडीना वासद्यामा ल्हा ल्हा ल्हा नवारा लाल्या. प्रतिहिन नवीन अंदर कुटे छे. तेथी नियं सामग्री नवीन राजनेगामां आसे छे. नव अक्तो अते हस्या नियं लक्तना भावयी आ लीला छे. यंदावलीज्ञने श्रीराधाज्ञने आ स्वाक्ष आरोया पछी, श्रीडोरज्ञने भयां, अने क्षुं के हे प्रभु श्रीरात्रामिनीज तो विरहमा झूमी करे छे, अने तमे तो भार पषु लेता. नवी प्रभु जोल्या, “तमो कहुं क्यारे आउः” यंदावली कहुं, “महाराज, तमारा जोल्यानु ठेकाउं क्यां छे ? ऐसो छे क्षुं अने यालो छा कुं एटले तमारी भरोसो. केम ना जोल, हुं नहर आवीस.” प्रभु कहुं, “अरे यंदावली अम ना जोल, हुं नहर आवीस.” यंदावली कहुं, “मारे भाय लाय भूमी कहुं के, विन्या हस्यामे आवीस.” प्रभुने ते भावावी यंदावलीना भाय लाय भूमी आवीना अहुं. अवीने श्रीराधाज्ञने वात अहुं कहुं. यंदावली हरभाइने चाली अह. अवीने श्रीराधाज्ञने वात अहुं कहुं. यंदावली हरभाइने यंदावली अहुं. कहुं. प्रभुनो रपर “अहेन ! वत तो ग्रेमधी न करीश, प्रभु भत लरोसो आवतो नवी प्रभु तो योले छे कुं अने याले छे कुं अने याले छे कुं” यंदावलीज्ञने कहुं, “मारे भरतुं हर्सा भूमी छे भाटे जरूर प्रभरसो” भरतुं हर्सा भूमी छे भाटे जरूर प्रभरसो. विन्याहसभीमे ज्ञर प्रभु आवशो भारे भरतुं हर्सा कहुं, भूमी छे भाटे ज्ञर प्रभरसो, ग्रेमधी वत करने.” श्रीराधा कहुं, “अहेन ! वत तो ग्रेमधी न करीश, प्रभु भत लरोसो आवतो नवी नवीन सामग्री भरे छे. नवरात्रीने नव विलास कहुं कहुं छे. नवरात्रीने

“हे धारी ! काले दरोरा छे. श्रीराधारु पधारसे, तेमना सन्मान मारे योग्य रथना करेन.” श्रीराधारु घोत्या, “हे साधी ! अने कह कहिं कहिं परे नहि. सधली योग्य गोदमधु करीस, परे भने ते छेवनो जरोसा नस, आवे त्यारे धरा.” यद्यपलील कहे, “जरे आवशे, भावे हाथ मुख्या पछी तो ना आवे तेम अने नहि.” श्री राधारुये पोतानी गुण कृष्णा सभीने आसा करी तेषु एक सहं विशाल महान सब जातनी सामग्री साथे एक रात्रीमां तैयार करी दीधुं अने श्रीवामि नेझने ते जोना भाटे दिनांति करी श्रीवामिनील पोतानी लकिता, विशाला, यद्यपली बगरे सभीओने लह जोना पधारीं. सर्वं सुत सामग्रीयी भरपूर ते अलौकिक धाम नेह पोते प्रसन थया, अने कृष्णा संभिनी सराहना करी, योताने मुकामे पाणा आव्यां भीजे दिवसे सवारे यद्यपलील दहीतुं भार लहने श्री राधारुने कहिवा लाव्या. ‘हे धारी हुं दही बेचिने पाजी आउं तुं. तां सुधीमां श्रीठाकोरुण परे पधारसे.’ श्रीराधारु कहे, अलो भहेन ला, परे वहेली आपने, श्रीठाकोरुणी भने पूरो भरोसो नथी, आवे लारे ‘धरा.’ यद्यपलील कहे, “विशास राख जरूर पधारसे.” यद्यपली दही बेचिन गए, अहीं राधारु प्रक्षु पधारसे लारे, शा आनंद कहवो. ते भारे अनोइ प्रकारना भनोरय करवा लाव्या.

बोपेर थथा परु प्रक्षु पधारी नहि, श्रीराधारुने येता थवा लागी. दिवसास धरतो गयो ते तो रसनोगी भमर छे. क्यांड भमता परु हरो. सांज पुडवा आवी, परु प्रक्षु पधारी तहि, अने यद्यपली परु आपी नहि. आम दिना करे छ. तेक्षमां यद्यपली आपी, फहेन्यां, अने छहीतुं आली भाट त्यां ज भुटी पूछवा लाव्या, ‘कुम आरी ! प्रक्षु पधारी ?’ श्रीराधारु कहे, “मैं तो प्रथम ज छुं तुं कु प्रक्षुनो भने लरेसो नथी, आवे त्यारे धरा, तारा आग्रहयी नप दिवस उपवास कर्ये ने शरीर सुकना नाम्यु, परु तेमने तो क्यां

આપણી પડી છે । હે કુ તો જાણી કહું સાંજ તો ચવા
માની. હે એ ચું આવે ?” ચંદ્રાલી કહે, “અરે ખારી । હે
ને બડી મારા વતી ધીરજ ધર, કું તેડી લાંબું ઝું. હાથ પકડીને
લાંબું ઝું. લગારે ગમભાઈશ નહિ, તરી પાજણ અમને સરેને ચુંખ
કે.” ચંદ્રાલી તુરત અણુંતે તેડ્યા સામે ગણ્ય.
અહીં પ્રણ પોતાનાં માતાને કહે છે. “હે મેયા. આવતી કાલે
સાહુરા છે. મને વરસોળ ભનાવને. મારા મારો એક સારી ઘોડી
લાવને. નાની તલવાર અને નાની બાલ પણ આપને, અને મને સુંદર
જરીના શશ્યાર પણ પહોંચને.” માતાજીએ અણ પ્રેસ-ન થઈ કર્યું.
“લાલા ! હું ને કહીશ તે તૈયાર રાખીશ. અત્યારે એઈ ના.”
અજુ કહે, “ચૌથા ! એ અધું અત્યારે લાલી રાખ, સલારે તો મોંડું
માટે જાય.” માતા કહે, “લાલા ! અત્યારે અધું તૈયાર કર્યું છું, હું
પોડી જા, સવારમાં આપીશ.”

પ્રણ પોડી ગયા આખી રાત ખારીને મલવાના વિચાર અને
તે વખતના આનંદની લહેરોના તરેગોમાં જ ગઈ. સવારમાં પ્રણ
હેઠા ઉદ્ઘાસ. ને ભાતાને ઊઠાડ્યાં, રનાન નગેરેથી પરવારી, શશ્યાર
થાણ, દાલ તલવાર લઈ ચોડી પર સવાર થથા. માતાએ ખલેવખજુને
થાયે લઈ જવા બિનંતિ કરી. પ્રણ બોલ્યા, “દાઢિ જોથા તો મને
નહીંત જિગવે છે તે આવે તો હું નહિ જહિ.” તેમ કહી જોડી
એથી પ્રણ કિતરી પડ્યા. ને ભાતાચે સખભાની પણ એસાડ્યા. પ્રણ
નેથાં ઉલટાનેર ચાલ્યા જાય છે પ્રણ અને વહું આનંદ લહેરમાં છે.
નેથાં પણ પ્રભુતી કૃષ્ણ જાણીને સીધી ખરસાતની વારે ચાલ્યા
અથ છે. રસ્તામાં એક સખીએ સામા આવી. જોડીની લગામ અલ્લા,
એડી ઉભી રાખી પ્રણ તેના સાચું જોઈ મંદંદ કાર્યથી કહેલા
બાધા, અર્દી તુ જોડીની લગામ છાડી હે, મારે શ્રીરામભિનીજીને મલવા
તર્ફ છે. તેમણે મારે મારે ડુપલાસ ક્યા છે. આને દસ્તો ડુપલાસ
અંતે ચાતકની પેડે રાંદ નોઈ રહ્યાં હશે. મારે તુ જોડીની

भोरेख पूर्ण कीर्ति: "हुँचा" सभीमे आ साक्षणा "विनति भी

"भहराज, हु आपने घोड़ी नहि कर, आ मारा भहेलमां पधरी पदिन करा अने प्रेम लरेली ताज सामग्री आरोगा, आपने झड़वा घोड़ी नहि कर, प्रश्न प्रेमने वस छे. हुचा सणना प्रेमने वस था तेना भहेलमां पेते पधायी, अने एक बड़ी एक सात ओराडास फरी वल्या. छेल्हे सातमा ओराडामां शेषा पर जिरान्या, अने हुचा सज्जनी प्रेम लरी सामग्री आरोगा, तेना सबै भोरेख पूर्ण क्या.

यद्यवली उतापणी उतापणी प्रझुने तेजवा जरी हती, तां माग्नमां जमधु भाजुमे एक सुंदर धोडी नेहि अने सुंदर भग्न नेहुं चंद्रावलीज तरत ज भक्त तरइ गयां अने भग्नना यो अंउमांदी धीन भुँझां नेतां नेतां सातमां भुँझां अनी पहेल्या, तो त्यां प्रलु सुंदर शेषा पर जिराजु धर्जा सज्जी साथे लहेरथी वाता करे छे. चंद्रावलीमे निनंती कही कहुं। भहराज, तमे तो भने प्रश्न जुही "पाठी, श्रीरामनीज तो विरहां सुकाइ ज्यु छ, अने आप तो अही लहरे उडापी रखा छा! आ आपनी केनी लीला! आपने जराये हसा नयी? हाँकेरु कहे, चंद्रावलीजु हु तो त्यां आवतो हुतो, प्रश्न आ हुचा सज्जी अने प्रेमी रोहि पाड्यो. लायर छुं," अभि कही तरत उठाया अने चंद्रावलीजी साथे "भहर आनी, घोड़ी पर रवार थहर चाल्या, अने भरसाते आनी पहेल्या. यद्यवलीजुमे आगण जहु श्रीरामाजुने श्री हाँकेरु पधायीनी वधामधु आपी श्रीरामाज बजेरे सज्जीओ आनहेमां आली जहु, श्रीहाँकेरुने प्रेमी भहेलमां पधरती लाल्यां, अने हुमारानी जुहीओ आधी श्रीहाँकेरुने भसत्कै शास्त्रगार करान्या श्रीहाँकेरुजुमे प्रश्न तां रात रही, सबै विहरी भक्तोना भोरेखपूरा क्यो.. प्रश्न सबै वाते समर्थ छे तेथी अनेक दृप धरी अनेक भग्नाक्तोने अनेक जातना सुभ अडी वधते आपी शके छे. धन्य छे, ते लक्तोने अने तेमा रेस्ता प्रक्तुने.

श्रीआचार्यांले के सेवक स्वामी वारता.

ओह समये श्री आचार्यांल महाप्रस्तु भजमें पधरे. सा ओह समे श्री आचार्यांनी तगेटीमे जोननसिला पर ज्ञेहे हो. ते समे हुँच्छासमेवनके भनमें योग्यता आह. नो चे श्री आचार्यांकी आसा प्रतिपालन करत हुँ, सदा सभीप रहत हुँ, और लोडिके कुँच आधुक हु, और सेवक तोहि चो सरीजो हुपापान नही हु, सो श्रीआचार्यांल श्रीभहाप्रस्तु तो अंतर्यामी हु. या भात हुँच्छास ते अनी ताकाल आपने जानी. और हुँच्छासने आजें आरभट्टें श्री आचार्यांलुके सेवा करडे प्रसन डिये हु, तथ कही, तुम यांगे सो हवे, तथ हुँच्छासने भाव्यो, "भहराज, योहुं हुपा करडे लीलासामग्री के हरसन करयो चाह्यो." तथ श्री आचार्यांकी हुहोमे ले अष्टके श्रीवज्ज्वे चलेगे, तथ श्रीगिरिजानी कहरामे हरसन करावे गे." सो वयन अष्टके सुध आयो. तथ भनमें विचारी नो, हुँच्छासके भनमें योग्यता आह, सों भिटावनो, और लीलासामग्री के हरसन करावने. श्रीही विचार करडे श्रीआचार्यांनी हुँच्छास सो कही, हुँच्छास एक कामकर हुँच्छासने कही "भहराज नो आसा" तथ श्री आचार्यांने कही, "पूर्णी के ओर अपसरा कुँच पास एक निरिजानी कहरा हु, सो कहरामे हु चाल्यो नहीं. तहां एक हैँच्छप हे, ताहु लगवद न्यरेस्तु करडे वाहें समाचार ले आह." तथ हुँच्छास हौत तही कै, तहां ते यदो. सो आगे यले गये. ता पाछें छुक नीची गेल आह, तामें हितरे. परंतु अंधकार भहोत. कहु अष्टकी गम्य नाही ता पाछे होहि हिन उच्ये यदे सो श्रीआचार्यांकी हुपा भल तो यले गये. हिन होहि लों गेल में विक्त आह सुधो यदो, जेसे लीत पर यदो. परंतु श्रीआचार्यांकी नाम के सामग्री जलतो नेसे आकाश मार्ग नियार कु यदे सद्दरमेप यापि तेसे हुँच्छास यदे तो तहां एक जिह्वी आयी. सो जिह्वी जोलके भीतर गये, सो उहां भहा

उज्ज्यारो आयो. मानो क्रौंचि रवि नेत्रो उज्ज्यारो हृष्य रवो हृष्य और अङ्गुष्ठ सुदूर अमात्यां को रथल हृष्य. ओसी भूमि हैप्पी, सा विष्णु भृष्ट उज्ज्यारो हृता. परंतु शुभ मनुष्य पशु पशी गोहि नाही हृष्य ताम् दुष्कृत्यास तहते आये यहो, तो महा सुदूर द्विरात्रि, निष्ठा रक्षादिक् भण्डि के वैद्यर्मण्डि, पोधराज्ञके, मोतीके, पीतिमणि के, चुक्षाभी भाष्टेके अनेक विचित्र कुंज हृष्य, जडे भटे भग्ने हृष्य. ताके भास द्वैलन हृ यारे यारे कुंज भग्ने भरक्त अष्टुष्टु लगे भ्रम हृष्य और तीव्रमण्डिनी भीत हृष्य, कुंचन तार जरी के सुदूर पूर्वी क्रमांके यहोन्हा हृष्य, तामे सुदूर अलरी लगी हृष्य. ता भग्ने को उधर जरावि, परम पञ्चरंगी भण्डिनके कल्पस परम सोला हैत हृष्य तहां सुदूरमण्डि जटित आसन घरे हृष्य ठोर ठोर सज्जा पुष्प मी समारी, हृष्य. ओसे ओक्तों सुदूर स्थल हृष्य. ठोर ठोर सज्जा द्वैल सो सामान हृष्य. सुदूरता के ओसिका घरे हृष्य, अति सुत्र यादर सुदूर राणाए हृष्य, अनेक जरावि आप्नाप्न सोल साझगार ओसी-पुरुष के उभरा जोहो पउ हृष्य, और अनेक बाल्के नवननीनके, चैक्कनके, भस्माइ, छीटके, रेखमीडे, भात भात के कोमल वाहीके अग्न्युच्चा (पोटला) जोहो परे हृष्य. अनेक चोली, लहोगा, सारी, वाग, कुलह, दीपारो, तुगट, चीर, पड़क, पीतामर, नीलांबर ओसे अनेक खरी हृष्य, ठोर ठोर सुदूर आसन बिछे हृष्य. ता पर गाति तडीया घरे हृष्य, सुदूर अरण्डा, उपरनो सुगंध सहीत कनके ऐक्षयों घरे हृष्य. अनेक घोती, उपरथा, अंगवस्त्र पहनी खरी हृष्य. अनेक कुनके पीला उपर आसन रोगरंग के घरे हृष्य. ताके पास तिलक को साज समझ-गौमुण्डी, माला ओरसिया, यहां द्वैसर,

उम्रुम घरे हृष्य. अनेक कंचनके चाल, वेदा, कटोरा कटोरि, कुम्हर घरे हृष्य. मृतिक्षु पात्रह घरे हृष्य. ता में अनेक पाँड साक्षात्क, नवीन सदा उन्नतवल सुगंध सहित भद्रस सन्तरस अनेक रस अनिवैचनीय चतुविंश नोजन तथा अनेक विष जो कही न गय. ओसो जया पानसु परेस्यो धयो है तिनमें यमया नाना प्रकारके रस परत्तमे घरे हृष्य. कटोरी रत्नजटित सोतेकी धरी हृष्य, और अनेक सुगंध भीरा भीरी समारके घरे हृष्य. पुष्पादि अनेक भातलात के भाला, चिन, भालति, जुह, नाई पारिजातक, अहलाई, चुलाई, वृलसी, आहि के सिंगार साम घरे हृष्य और अनेक वालित्र पञ्चराज्ञी दुधरे हृष्य. और अनेक पदार्थ सभ घरे हृष्य, सो मृश्वादसन हैप्पी, और उहां भागमें अनेक वृक्ष फल फूल सं छुमी रहे हृष्य ना फलमें गोहली छील जामे नही. महारास रूप सुगंध सहित ओक्त रस लगी रहे हृष्य. उहां भागमें कुडा कचरा फू नाही हृष्य, ता वृक्ष के पान अरेत नही हृष्य, सगरे वृक्ष नमपलव होहि रहे हृष्य. ताहा जो वस्तु हृष्य, सो सदा नवीन हृष्य, अलीकिंड हृष्य. तहां कुटतरल तो भांत भांत रंग रंग के चोक पूरे हृष्य, नाना प्रकारके भण्डिनके, मोतीनके, जरीनके, भक्तनी दृश पात के कुंज के द्वार द्वार पर भहनवार जाए हृष्य. जा हेये उल्लास परमानं होवे. अनेक द्विनों कुवारा भण्डि जटित तरंगरंग सुगंध सहित कुटे हृष्य, तहां जवामें अनेक कौतक घेल होत हृष्य. ओसे स्थल ओक ते ओक अधिक सुदूर हृष्य, कोटानांडि अग्निया हृष्य, अनेक जेठड हृष्य, अनेक भागला हृष्य, अनेक हीरिया भाट हृष्य, जोसे अनेक रेलव रोजगानी हृष्य. सो अनिवैचनीय हृष्य. हृष्टवे में नाही आवे. परंतु पशु, पशी, मनुष्य कोहि शुभ नाही हृष्टवे, ओसे स्थल हृष्टके कुष्ठाहास ता ते रंगेक आगेचले, ताहा हृष्टवे, ओसे स्थल हृष्टके कुष्ठाहास ता ते रंगेक आगेचले, ताहा हृष्टवे, जात भात के कमल द्वैले हृष्य, सागर दूष, दही, भधु, धूतके,

ભમરસકો, મિત્રસકો, આંભરસકો, નાણુકરસકો, ધર્માહિ બામર અને પ્રકારકે હથ, છોટે ખરે સરોવર ખાર બચે હથ, ઔર રસ ચાખ ભાતાતિ સાખરી, પકને, સખરી ખરમ મનોહાર ઉલ્લખ સાદા નવીન માનો અમલી અનિન પર તે જીતારી. અનત ખુંર ચુગથ સહિત શાકપાક, કુંજ, છરી, ચક્તા, કુનેનાં, રાયતાં, જીંદાનો, વરી, પાપડ, કંઠી, તિનકુંઠા, ખરે હથ. પરમ સોહાવને વદ્ધ, બન હથ, ચોક સોહાવને હથ. વાઢી, હેંપ, શ્રીલ. નદી સોનિત હથ. પરતુ કોઈ જીવ હેણ્યો નહીં. તથ કુંઘદાસ સોચ કરતે, ઔર આગે ચલે. મનેં વિચારે નો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રશ્ન કહ્યો, જો વૈષ્ણવી. ખ્પર સમાચાર લે આઓ. સો મેં કેન્દ્રી ખ્પર લે જાઉં. કંઠાં તો કેંદ્ર દીસત નાહીં. ચા પ્રકાર વિચાર કરત ચલે. સો આગે આમણી વાતી આઈ, પરમ ચુંદ્ર હેણી. તાંએ હથ લાલ, પ્રીલે બોણ લગ્યી રહે હથ. રસકું કારે જનેં ગોટલા નાહીં. રસમેં લીનિતા હથ. એક આંદે કે ઉપર સંઘા પરમ ચુંદ્ર હેણ્યો. તથ ઉપર જોંઠ હથ હેણવે કા, અલોકિંગ હેઠ, ઔર દીપમણિસી ચાંદકો પ્રકાર હથ. ઔર ડાંસ સંઘા શ્રી કૃષ્ણ, શ્રી કૃષ્ણ, કહેત હથ. તથ કુંઘદાસ વાકું હેખ કું મનમેં વિચાર કર્યો, જો કણાયિત ચા વૈષ્ણવ હેય તો હેય, ઔર તો કોઇ દીસત નાહીં હથ પણ પંજી પ્રાણી માત્ર નાહીં હથ તથ કુંઘદાસ આખાસે મંત્રી પોતાર કરત લાગે સો ચા ચુંઘાને ચુંની સો ચા સંઘા સારસ્વત કલ્પમેં કુંઘાવતારકો તોતા હથ. સો તથ તેં અપરાધ કરકે વિશ્વચી હથ. તા દિન તે કહું જાનપન કિંચો નાહીં હથ. યુખ આગે કુંદર ફ્લાહિ સાખરી સાખ ખરી હથ. જલ ભાગો હથ, પરતુ એ સંઘા કરું જાનપન કરત નાહીં હથ. મનમે યથ વિચારો હથ, સો ચે જાનપન કરું તો ચેરો ઝતનો અમનોલ મિથ્યા જાથ કાહે તેં જાગ્રદ નામ વિના મિથ્યા કાલ ભગવદી કું વિતાવનો નાહીં, તા તે મિથ્યાકાશ જાયગે. તથ મેં જાગ્રદ લીલામેં કેંચે પ્રાત હોળ્યો. ચા પ્રકાર વિચાર કરત હથ સો સંઘા પહેલે શ્રીકૃષ્ણ કહેતો નાહીં, તા તે મિથ્યાકાશ જાયગે।

ਸਾ ਬੜ੍ਹੇ। ਸਾ ਚੁਲ੍ਹਾਂ ਕੁਝਵਾਸ ਦਾਰਾ ਤੇ ਆਆਚਾਰੁ ਕੋ ਉਪਹਾਸ ਅਧਾਰ ਮਨ੍ਤ ਤੋਂ ਭਰੋ। ਤਥ ਉਹਾਂ ਚੁਲ੍ਹਾਂ ਨੇ ਪਛ ਕੁਝਵ ਅਗਵਾ ਨਾਮ ਲੇਤ ਹੈ। ਸਾ ਮੇਰੇ ਅਗਵ ਪਰਤ ਹੈ ਤਾਂ ਭੁੱਧੇ— ਭੋਲੇਤ ਹਿਨਕਾ ਭੁੱਧੇ ਘੋਸਿ ਛੁੱਕੇ, ਕਾਨੂੰ ਕਰਤ੍ਰਿ ਰਚਿ ਨਾਹੀ ਹੈ। ਪਰਤ ਯਕੀਨ੍ਹ ਮੋਹੂ ਕੁਝ ਮਿਲੇਗੇ ਤਾਂ ਤੇ ਅਗਵਾ ਨਾਮ ਕਾਨਸੇ ਚੰਨਤ ਹੈ। ਅਥ ਕੁਝ ਆਪਾਨ ਕੁਝ ਲਈ। ਯਕੀਨ੍ਹ ਆਗੇ ਗਲੀ ਤੇ ਭੁੱਧੇ ਭੁੱਧੇ ਪਰ ਆਂਧੇ, ਏਕ ਚੌਂਚ ਅਨੁਕੀ ਲੀਂਦੇ। ਪਾਛੇ ਵਖ ਕੀ ਭਾਲ ਓਪਰ ਜਥੇ ਏਡੋ ਅਗਵਾ ਨਾਮ ਅਧਾਰ ਮਨ੍ਤ ਲੇਨ ਲਾਗੇ। ਸਾ ਲੋਭ ਮਨ੍ਤ ਅਧਿਆ ਸੋ ਅਗਵਾ ਨਾਮੇ ਕਲੋ, ਔਸੀ ਵਚੂ ਸ਼ਸ਼ੇ ਸ਼ਸ਼ੇ ਹੈ! ਯਾ ਪ੍ਰਕਾਰ ਜਲਖਾਸਵਾਹ ਤੇ ਭਗਵਦ ਨਾਮੀ ਸੁਖੀ ਵਿਸਰ ਅਥੀ, ਔਰ ਰਵਾਦ ਭੋਗਦੀ ਰੁਕਤਿ ਭਣ ਤਥ ਕੁਝਵੇ ਵਖ ਓਪਰ ਜਥੇ ਔਰ ਏਕ ਫੁਲ ਆਂਧੇ। ਸਾ ਤੇ ਮਿਥ ਨ ਕਲੋ, ਪਰਤੁ ਭਹੇਤ ਕੁਝਵੇ ਲਾਗੇ। ਤਥ ਏਹ ਪਾਥ ਕੇ ਕਲੋ, ਧਨ ਤੇ ਫੁਲ ਕੁਝਵੇ ਹੈ, ਭਹੇਤ ਕੁਝਵੇ ਲਾਗੇ। ਤਥ ਘੇ ਪਾਥੇ। ਧਨ ਪ੍ਰਕਾਰ ਆਖ ਲਗੀ, ਸੁਆਹੁਕੁਂ ਭਿਲਦੀ ਲਈ। ਰਹਿਰ ਵਾਡੁਲ ਹੈਥ ਤੇ ਵੇਡੀ ਧਰੀ ਤਾਂਹੀ ਅਈ ਵਾਕ ਪਰ ਜਿਰ ਪਾਥੇ। ਸਾ ਕੁਝਵਾਸ ਹੀਤੁਕ ਦੇਖੀ ਮਨ੍ਤ ਅਗਵਾ ਨਾਮ ਲੇਨ ਲਾਗੇ। ਪਾਛੇ ਵੇਡੀ ਧਰੀ ਪਾਛੇ ਵਾ ਚੁਲ੍ਹਾਂ ਮੁਢੀ ਭਾਗੀ ਤਥ ਉਠੇ ਭੁੱਧੇ ਪਰ ਏਠੋ ਅਗੀਬੇ ਸਿਥਰਤਾ ਨਾਹੀ, ਤਥ ਅਗਵਾ ਨਾਮ ਚੁਨ੍ਹੇ ਨਾਹੀ। ਕੁਝਵਾਸ ਮਨ੍ਤ ਲੇਤ ਹੈ। ਤਥ ਚੁਲ੍ਹਾਂ ਮਨ੍ਤ ਵਿਚਾਰੀ ਜੋ ਮੇਂ ਮਹਾ ਕੁਝ ਹੈ। ਮੋਹੂ ਔਸੀ ਕੁਝ ਅਤੇ ਪਤੇ ਹਿਥੋ ਸੋ ਭਿਚਿਤ ਹੈ। ਕਾਹੇਤੇ ਮੇਂ ਕੁਤੋ ਕਾਲ ਅਗਵਾ ਨਾਮ ਤੇ ਆਖਾਰ ਚੁ ਰਖੀ। ਪਰਤੁ ਮੋਹੂ ਦੇਣ ਸਥਾਂਥੀ ਕੁਝ ਸੁਖ ਅਖੇਨ ਨਾ ਹੋਗੇ। ਅਥ ਮੇ ਆਨਪਾਨ ਕਿਥੋ, ਆਦਰ ਅਗਵਾ ਭਾਗ ਪਵਾਈ ਤੇ ਰਵਾਦ ਕਿਥੋ, ਤਾਨ ਅੰ ਪਰਾਖ ਕੁਝੀ ਆਦਰ ਕੋਉ ਨਾਹੀਂ ਹੈ। ਨੇ ਧਰ ਹੈ ਦੇਖੇ ਲਿਧੇ, ਸ਼ਵਾਨੀ ਪਾਨ੍ਹੇ ਲਿਧੇ, ਰੱਖਨਾਕੇ ਸ਼ਵਾਨੇ ਲਿਧੇ ਅਗਵਾ ਨਾਮ ਛੋਡ ਦਿਓ। ਕੁਝਵਾਸ ਤੋ ਧਨ ਧਮੋ ਨਾਹੀ। ਕੁਝਵਾਸ ਤੋ ਧਨ ਧਮੋ ਹੈ, ਜੇ ਸ਼੍ਰੀਹਾਤੇਸ਼ਵਰੁ

महाप्रसाद अतीकिक ज्ञानके लाभ देनेता ताकुं में दे के स्वाद भजाने।
 यह जलो और तुरे, ताते गो भरान्नर अपराधी कोड नाही हय. जो
 चें अपने उद्दर भरनके निमित लगवद असरो छाड हिचा. जहां
 तहां जात हिचो, ताते ज्ञान उचित नाही हय. या प्रकार भनें
 वैराग्य करके विरहतापञ्च तक्षत तक्षत के हृषि छाडी. एसो ताप
 हृषिश भगो ने स्थाके मुखते अभिनवला निकली हृषि यो
 सगरो सरीर जब गया, राघ लह. तीत्य लीलामें प्राप्ति लह.
 यह कोटक हृषके हृषिशास्त्रे मनमें सोच भडो भया. और चित्तमें
 यह भया. तथ भनमें कल्पो, यह स्थाको प्रेम कोन प्रकार हय यो
 नहीं नहीं गया यह भात श्रीआचार्याङ्कुं पूळुगो, तथ सहि
 हृषि हृषिश. पाछे हृषिशास्त्रे भनमें विचारी ने, हय स्थाकी हृषि तो
 छी, और हृषरो अवता कोड दीसत नाही हय. जहां जहां हृषि
 तहां सो ज्ञानको कुंज भाग है. हृषि हृषरो ज्ञाने तो यासें
 ज्ञानतंत्रे भाग निरुप है. एसे एसे आड अकेत अनेक पार
 नाहीं सो हृषिशास्त्रे विचारी ने चें कोन गेल आयो. और कोन
 गेल जाऊ, सो कुछु सुअत नाही! कुसे करे! जहां जहां हृषुं तहां
 तहां नवीन नवीन रथना. एक हौड छाटे कुंज भेहेल. जहां जहां
 हृषुं तहां रथी आवे एसो हिकोनो हय. या प्रकार हृषिशास्त्रो
 यिता करत निरा आहि, सो नेन मुंद गयो सो हौड धरी पासे
 तिरा खूली. हैचे तो श्री आचार्याङ्कुं भाष्मपुल्लुके आगे हृउ हय.
 तथ मेसन देह तु श्री आचार्याङ्कुं हृउत हिचो, और
 सगरो प्रकार हृण्यो सो विस्तार करके कल्पो. उष स्थाकी हृषि हृषी
 करी. जो भहाराज, यह सुआ पूर्व जन्मको कोन हय. धन्ती कला
 प्राप्ति लह. और ऐसो सुहर रथल सगरी सामग्री सहित हय ताकु
 हैं नाही, ता को प्रत्यन कहा. तासो यह हृपा करके कहा. तथ
 श्रीआचार्याङ्कुं भुसङ्खायडे कल्पो ने यह वात सुनवेंदो अधिकार नाही

६. तथ हृषिशास्त्रे विनांति करी ज्ञे भहाराजभीये तो सुगत (भराअर)
 है. यो तां जुव हृ. परतु आपके सरन तु. आप ये नाय हौं,
 आप ये ये पर हृपा न करोगे तो, और कोन करेगा? में विना
 भूतको आपको हास हृ. ताकुं योहुं हृपा करके कल्पो यांडे तम
 श्रीआचार्याङ्कुंते कल्पो यांडे भात चुनके कल्पो करेगो? लकित भारग भहा
 कुठिन हय, हृषुं सुने पूळे ते होत नाही. तथ हृषिशास्त्रे देर विनांति
 हृषी, "भहाराज! ये भनमें तो धर्म रंगकुल नहीं हय. परतु हृम
 सारीये हृषिशुद्धि अवहुं हृपा करके सरन लीये हय. हमारे भन
 कल्पो जास्त नाही हय! तेसे ही पतिपातन आपको नाम हय. ताते
 आपकी योंदर हृषके हृम पर हृपा करेगे तो लकितभागांको सिद्धांत
 समने, नाहीं तो नहीं समने. औंदर हमारे पापकी और हृषेजे नो
 हमारो हिकोनो नाही हय. ताते आप हृपाल है, अप हमारी उपर
 हृपा करके भतवो अकितभागकी कनिका जानी नाय. ताते में
 निःसाधन हृय के आपके सरन हृ. एसो दीन तानके भतवा
 याहीये." या प्रकार तीन येर विनांती श्रीनी तथ श्रीआचार्याङ्कुं
 प्रसन्न हृय के हृषिशास्त्री दीनता हैर्पी के कलन लागे, जो गोवर्धननी
 भीतर कुंजस्तन हय, भाग हय, भयीआ हय, भगवा हय और सगरी
 लीलासामग्री हय सो अतीकिक लीला श्रीहृषी हय. सो आरभद्रिये
 तोहुं वयन कल्पो होतो, जो जगमें ताकुं लीलासामग्री हिभावगे.
 सो हिभायो, एसे स्थल कोटान दोहित हय यह तो सारस्वत कल्प में
 प्रथम रासकीडा प्रजुने करी, सो रथपृष्ठी सामग्री हय यांडे प्रतांगल
 ग्राल मुकुर्त भयो, तथ श्रीस्वामिनी, श्रीहोकोरु अपने निर धाम
 भीतरराज्य के धर भमारे. पाछे रात्री भक्त तथ हृषरे स्थल लीला
 ७. वह तो योंक रात्रीमि भमशुद्धि सामग्री हय. सो ताकुं हिभायो
 हृषुं धर्मपदारत, वर्ध धर्मजा हृषयी. ताते एक सस सदाली रहत
 हय और गोप्य रितिसं तीत्य रथपृष्ठ हय. तहां सगरे पधुं पांडी लक्त
 सहित श्रीहोकोरु रमण करत हय. सो अधिकार विना हरीन हैय

नाही तोड़ुं वचन हिया होता, जे सामग्रीडे दर्शन करावेगे, सो कराये. अब यह सद्या हय. सो लक्षिताळजी सभी की सभी हय, सो गायन निघामें यहुर हय एक दिन गवा भयो जे यो भरोपर गवैया कोई नाही हय. अब तो उत्तो गवा आवत ही सभी हे पृष्ठ गयो. सो सारस्वत केव भयो, तभी सद्या भयो, भगव नाम लेत हय. ताते श्रीठाकोर्लु के दरशन नाही हय. तोड़ुं रमण्यमें चेप्यता आई, जे मे आयायण्डु के सगरे हित हु, निम इच्छावाती सुनत हु. सो यह तेरो गवा हुर करतेके लिये, और वा मूर्खांची सरन सिद्ध करण्याके लिये, और तोड़ुं लीलासामग्री दिघावे के लिये तोड़ुं निरिण्यकी कहरामें पढायो. काहेते यह सुभा जे दिनेला भोजन चेसे निष्क्रिया हय, ता हिनते नामकी रटना लिये हय सो नाभु आधारमें भूम येस भाषा हुर संबंधिती नाही भई. सगरी सामग्री आगे धरी हय परंतु यह वैष्णव हय. ताते करपत हय ने मे भानपान लेड्यो, तो भेरो भगवद् नाम छूटा लग्यो. उत्तो शान रघो. और दीलाहो शान भूल गयो, जे मे लक्षिताळी सभी हुं सो अब तुम जायेके अपराह्न भने कड्डो, तथ यही सुआ सुनहे अष्टाक्षर “श्री हुंसः : शरणं भम्” कहेन लाग्यो. या प्रकार शरण तुम्हारा तोड़ुं सिद्ध भयो. पाछे वहां सद्या तुमारे मुख ते भगवद् नाम सुनेके विचार क्योंयो, भगवद् नाम सुनत नाहिंगा, और उंच भोजन कडेगो सो एकवार भयो. कुसरी वार लोक भड्यो. सो कुसरी वार भायो. सो भिज्यन फल लाग्यो. तथ तीसरी वार भायो. सो फल सुहृद होता, तोछ सरण सिद्ध भयो, ताते हुं प्रकरण्याक्षर कुडवा भायो. भूमी हो धरी लह. पाछे जायो, परंतु शरीरके कुट्ट खेलत. तथ अनुग्रहते भगवद् नामकी सुधी भई तण अपनो होष रक्षणी जे वैष्णव हुं भगवद् नाम आहो भानपन होतो. उमित नाहीं हय ताते योडुं विज्ञार हय. अब धर्म गयो.

अनिन्दु भरम हो अयो. लीला सहित अब श्रीरामनीलक्ष्मी सभी भई. ताते तापक्लेश कुप्य हैं. स्वेच्छा दिव. कहाते भगवद्संभवमें आवे तो भगवद् धर्म है दद करे. यह करते हैवीडुं पावत हय. या प्रकार दुम दारा लीला स्थिरती लीला प्राप्ति भई. और तेरमें चेप्यता आई, जे मो समान ओर कोई नाहीं हय. ताते तोड़ुं असी वैष्णवता वा पंचाङ्गी दिघाई. जे या पंचाङ्गी क्षेत्र। ने याते तोड़ुं अनपान कर्ते तो भगवन्नाम विना भेरो वया काल नाय. पाछे दुम दारा अद्याक्षर भने सुनतही अन अद्यु दियो, ताते रम्यक आनपान लियो, तामें भगवद् नाम युक्त गयो, या हुंभ पायो. परंतु हुंभमें भगवद् धर्म भगवद् आसरो आराङ्ग भट्यो. (वयो) सगरे साधनको इल विरह तापक्लेश हय, सो भयो, हेर छाही जोहोत कालको विज्ञो होता, सो हुर भयो. लीलामें प्राप्ति भई. ताते वैष्णवकुं एसो ताप चहिये, और ये वैष्णवता ही हय. श्रीठाकोर्लु श्रीठाकोर्लु अंतरेखान होय गये, तो और अक्तनकी कडा यक्ती हय! पाछे हीनतासु भगवान प्रगट लय ताते गवा हय सो सगरेको हुर करत हय. दास भावते ने सेव करत हय. या प्रकार श्रीमायाचर्णलु महाप्रभुलु दुष्प्रशास्त्रं भगवदीयो रवरूप हिभायो. दुष्प्रशास्त्रं साक्षी हिनी सो यह सद्या श्रीमायाचर्णलु असो दुपापात्र हय.

हिनकी याती कडा ताढ़ुं लियेये

अंगलाचरण

- १ अंतासंतानहंतारो, यत् पादाङ्गुरेश्वः;
स्त्रीयानां ताज्जनजायायैन्, प्रशुभामि भुद्भुङ्।
यद्दुयक्तो ज्ञातुः; सर्वे कुभातिगा भवेत्,
तमङ् सर्वाः वहे श्रीमहवल्लभनहनम्।
- २ यद्युक्तं तात्यरेतीः श्रीकृष्णः शरणं भम
तत्त्वोवास्ति नैर्विचलयोद्दिक्षे पारबोद्दिक्षे।
- ३ भम वित्तस्थ निष्कासः श्रीगोपीजनवल्लभेः
यथा तदा कृतायोद्दिक्षे शोचनीयो न कृद्दिक्षितः।
- ४ असान तिभिरांधरय, सानांनशलाङ्कया,
चकुरुभीक्षितं येन तर्गे श्रीगुरुवे नभः।
- ५ नभामि हृदये शेषे लीलाक्षीराज्यिष्यसाधिनम्,
कष्टभीसङ्खलीलाक्षिः सेष्यमानं क्लानिष्यम्।
- ६ चतुर्भिंश्च चतुर्भिंश्च चतुर्भिंश्च चिकित्सया;
प्रदलिविराजते योऽसौ- पर्याप्ता हृदये भम।

ध्येयोग समये ७४ करवना श्लोक १६.

- प्रकृ लनमां गोचारण अथे पधारे, ते विरह समयमां
श्रीरनामिनी दग्धे ग्रजुनाभ्यो नारवार एव ७४ क्षये करे छे ते
लाव क्षुद्यभां उपेन करवा आटे भद्रातुलानी श्रीवित्तिराज्य
पोताना शिक्षा-पत्र १८मां एव विप्रयोगानां वयतो क्षयां छे ते
श्लोको भाविकोये पाठ करवा योग्य छे, तेथी अहो लीधा छे, विवरी
भक्त आ श्लोकोरो ७४ अलत करशे तो अज्जर तेन पश्च द्याग
प्रथम दर्शन आपी तेना सर्वे भतोरय पूर्ण करशे ते परमानन्द
दान करशे।

- आवनीयं सदा वित्ते, स्वाभिनीश्विप्त भुद्भः
तापहलेशीरयं मार्गः, श्रीमहाचार्यविप्तिः
द्विन देवि गोपीश^१, गोकुलानहायड^२,
गोविद^३ गोपवनिता-प्राणाधिप^४ कृपानिषेध
गोपाल^५ पालितम्भ^६, निष्ठव्यग्नुभुष्ये
परमानद^७, नदाहिस्यम्यरोत्संगलालित^८,
- सदानद^९, निजानहस्यमुहायप्रवायड^{१०},
द्विमोहर^{११}, द्वयद्वै^{१२}, हीनानय^{१४}, द्वयापर^{१६},
पुरुषेनाम^{१७}, सवोंगरसचिवर^{१८}, ग्रेमपूर्ति^{१९},
अनंगउपपरम^{२०}, प्रिय^{२१}, गोपवृष्टपते^{२२},
वग्नवक्षभस्तुटे^{२३}, लंबकेश^{२४}, क्लानिष्ये^{२५},
विद्यातिटे^{२६}, स्त्रीयमोक्षरस्तत्पर^{२७},
भगविनेद^{२८}, भावान्मेद^{२९}, भावपत्र-हृदयस्थित^{३०},
यचलिकृतिरत^{३१}, रवाक्षावान्दीलित^{३२}, उपर्युक्त,
मध्यामुख्य^{३३} सदाहृद्यपाततपरमानस^{३४},
नवनीतालितमुख्य^{३५}, प्रयोगिक्षुताध्य^{३६},
अवलङ्घतवहन^{३७}, महनाभिक्षुहन^{३८},
क्रोलविक्षयाम^{३९}, क्षत्रितिक्षांयत^{४०},
- सिंजन्नु पुररोक्ताद्य^{४१}, नभभूप्यभूप्ति^{४२},
सदीपस्त्वमुक्तिविलसत् क्षुद्धांटिक^{४३},
क्षुद्धांयवैयाहनभूप्यभूप्ति^{४४},
रागद्वयवैयाहनभूप्यभूप्ति^{४५},
विश्वालालिविलसत्^{४६},
दीनेक्षरस्य^{४७}, रत्नागसव्यसामर्थ्यसुत^{४८},
मगरागसुत^{४९}, रत्नायग्ननीक्षरस्य^{५०},
६१ दीनेक्षरस्य^{५१}, दा सदानद^{५२}, दा वृद्धानभूप्य^{५३},
दा नहनागत^{५४}, दा ग्रीष्माहात्मेलनप्य
६५ गोपिक्षर^{५५}, दा नायप्य^{५७}, हा गोकुलपुरहृष्य^{५८},
- १० ११ १२ १३

ଶୀ ହା ମରାନାତିଲ୍ଲିପାଇଁ, ଶୀ ହା ନିଃଶାପନାମିପାଇଁ
ହା ହା ନଦ୍ଵାଦିଷ୍ଵରପାଇଁ, ହା କାଇନଗନବାଙ୍କରପାଇଁ
ହା ନିରାକାନାଳପାଇଁ, ହା ଛାନ୍ଦଲଫୁଟିପିରପାଇଁ
ଏବିଧାନି କାତା, ଅଧିପତାନି ମୁଣ୍ଡରୁଣ୍ଡା;
ଅବଗତ୍ସ ଯ ଜାବେନ, ଭାବନୀଥାନ୍ଧନିଶ୍ଚତ

આ ચોસદ નામ વિરહસમયનાં છે, અને ચાર મુખ્ય
રવામનીજીના ભાવથી છે. દરેક ભાવનાં સોળ સોળ નામ છે. તેની
 જ્યુ વિરહીકાત સદા કરશે તો તેને પ્રશ્ન દર્શાન આપશો, અને ને
 કોઈ સામાન્ય બાત આ નામનો પાડ કરશે તો તેને વિરહભાવ ધરો.

કુલાંગ

ज्यति तेऽपि, जन्मना प्राप्तः अयत कृत्वा शब्दम् इ,
दृश्यत दृश्यतां द्विषु तावक्तव्यं ध्रुतास्तरत्वां विभिन्नते,
शरहुदास्ये साहुगलतस्तरसिनोदशीभूषा दशा,
सुरतनाथ ते सूक्ष्मासिका वरद निखतो नेष्टुं त्रितानवात्
विष्णवायस्मै व्याकरणस्त्रिप्रभारतद्वितानवात्
वृषभयात्मन्दिष्टो भयाद्यथ ते वयं रक्षिता अष्टः
न अष्टु गोपिकानन्दना भवान्यधिकहेहिनाभन्तराभद्दृ,
विघ्नतस्याचितो विव्युय्ये साप्त उद्देश्यान्संवतां रूपे.
विरचिताक्षयं वृष्णिक्षयं ते शरण्याभिष्पूया संसेव्यात,
करसरोरुहं कान्त, कामदं सिरसि धीह नः श्रीकरमग्र.
प्रज्ञनातीष्ठ न वीर चोपितां निजग्रन्थमयम्बन्धनस्तरिमत,
भज सम्प्रे लक्ष्मीकृतीः समो। गृहस्त्रानन् यास्त्र हस्यां
प्रथमतहेहिनां प्रपञ्चाण् तृष्णमरत्वं ग श्रीनितेतनभ्,
कृष्णरूपितं ते पदाम्बुजं देष्टु द्वयेषु नः कृन्ध वृद्धयोग्यम्

- | | |
|----|--|
| १४ | विविक्तिरिद्धिा वीर ब्रह्मतीरथसमिक्षानायायरेव नः
तत् भास्तुं तपत्तिवनं क्विक्तिरितिं कल्पयापहम् |
| १५ | प्रवस्थगंत् श्रीभद्रातं लुप्ति गृणन्ति ते भूरीदा जनाः
प्रहस्तिं प्रियं प्रेमविक्षयं विक्षयं च ते ध्यानमगलम्
रहस्यं संविदा चा हस्तिपुराः कुरुते तो भनः क्षोभचन्ति हि.
चलसि यद् प्रजात् चारथ्यम्भुन् निलिनक्षद्वं नाथ ते पदम्
शिवतपाण्डुरैः सीद्धिति नः कलिलतां भनः कान्त गच्छति. |
| १६ | हिनपरिक्षये नीलकुन्तलीर्वन्तरहाननं लिङ्गावृत्तम्,
धनरजवलं हर्षयन्मुक्तमन्विति नः स्मरं वीर यज्ञसि. |
| १७ | प्रपृष्ठतकामद् पद्मज्ञायित धरविष्मयुडनं ध्येयमाप्ति,
यरस्यापं कूर शांतम् च ते रमण् नः स्ततोवपर्याधिष्ठित
क्षेत्रपर्वतं शोकनाशनं रव्वितिवेष्टना, सुअुं चुम्बितम्,
क्षेत्ररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्ते तेऽन्वयाभृतम्.
आरति यह भवनहि काननं त्रुटिरुग्यायते त्वामपरथाम्,
कुरुतेऽन्तलं श्रीमुखं यते ७३ उद्दीक्षता पद्मकुरु हशाम्.
प्रतिकृता-वस्त्रातभाव-व्यवनितिविध्ये तेऽन्यन्युतागताः,
ग्रतिविवरत वेह ग्रीतमेहिता: क्षित व योषितः कर्त्तयनेन्निति
रहस्यं अंकितं कुरुत्येहयं प्रहस्तिनानं प्रेमविक्षयम्,
पूरुषुरक्षियो वीरम् धाम ते मुहुरतिरप्युष मुख्यते भनः
मना॒नोक्तां व्यक्तिरंगं ते वनिनह-यस्तं विक्षयगंतम्,
तथा भनार्दय न नस्तवस्पृष्टाभनां स्वप्नं कुरुन् यन्निषुद्धनम्.
परो सुगत यरस्याम्भुरहं स्तनोऽुः |
| १८ | भीता; शौः प्रियं हस्तीभवि कुरुरोषु,
तेऽन्तवीभस्ति तद्व व्यथते न इक्षिवत्,
हृपैविनिभ्रमति धीर्भवद्युषां नः |

श्री धार्मिकमहात्म व्रजवीक्षणे रसिया

(१) रसिया क्षितिजारी दीक्षांको.

भन गये न-हलाल क्षितिजारी, १ शीता चुदवाय लेउ घारी,
लहंगा पहिर ओट सिर सारी,

अंगिया पहरी जारी जडी क्षितिजारी,

शीता पर शीशकूल भौता, लगाय लियो काजर होउ नीना।

पहिन लियो न-भरिये असे गहना।

२५३—न-भरिये अहों पहिन कर, कर सोलह शंगार,

भलिहारी न-हन-हनकी, सो भन गये नर से नर।

भन गये नर से नर कै, औली कृष्ण पर कारी, भन गये १
धरी कृष्ण औली गढरी, गैर भरसानकी पहिन,
भदल वृषभान चले आये, नहि पहचान किञ्चु पाये।

श्याम अति भन मे कूलसारे।

२५४—महब श्रीवृषभानके, ४४ अवान लगाय,
न-हन-हन क्षितिजारी भै, (कोडि) शीता लेउ चुदाय,
शीता लेउ चुदाय, अरी भै हु ज्ञेनकारी, भन गये २
राधिका चुन क्षितिजारिन भैन, शगी क्षितिज से ओसे कहन।
क्षुलायो लिलारिनदं लख, भै यापे शीता लेउ चुदाय

जिसाया लाई तुरत चुलाय।

२५५—क्षितिजारिनको रूप धन्धि, श्रीवृषभान कुमार,
हंसी हंसी कै कहिने लागी, लाई पास ज्ञेन।

शीता भोतन गोइ सुधुड कुसी गोदनकारी भन गये ३
हगत पर लिखहे श्याम शितिजारी, भरतको महत्त्वररी;

क्षेत्रनये लिखहे दृष्टु त्रुपाल,
होडी पे ढाकुर लियो, सो गल भें गोकुल चन्द,

क्षातीये लिख छेल, होडी भाङ्गने लियो जिहारी, भन गये ४
हायपे हलधरझुकी बौया, अंगुरिन भें आनंद करेया,
पेटये लिखहे परमानंद, नालिये लिख हे श्रीनहननंद,

नांधये लिख हे ज्यगोविन्द।

२५५—वौटुनमें धनश्याम क्षिप्प, पिडुनमें प्रतिपाल,

चरणनमें चित्योर लिख, जगपति ज्यगोपाल,
रोम रोममें लियो रापति, राधा भनभारी भन गये ५
शीता गोइ ग्रेम गरा आये, तन भनको होक गमायो,
भपर औली कुड़ा भी नाथ, भरनये अरन नाथ हराय,

सभी क्षम हे भरत ही रह नाय।

२५६—हेषत ही रहि गए, अग्नो निरभ कुँ फूँ कौ;
भीसो असे दीये क्षमी, छलियां ये देखा न-हन।
आंगियामें भंसी छिप रही, राधेन लाई निकर कै,
हो ध्यारे । हे घारी, कहो भेटे हय कुना पसार कै,
वासीराम चुगाल लेरी पर भार (२) भलिहारी भन गये, ६

(२) रसिया भालिन दीक्षांको।

भन गये भालिन भदन चुरारी छलवेकु राधा पारी,
न-भसिये शंगार भनायो, लिख कु कामहेव शरभायो,